...डा० शास्त्री-
...न्दन--पुष्पांजलि

सम्पादक:

कन्हैया प्र० : : गगनदेव प्र० सिंह

श्री बी० के० शास्त्री अभिनन्दन-पुष्पांजलि

प्रकाशक : चम्पारण जिला आर्य सभा

मुद्रक : अर्चना प्रेस, नागा रोड, रक्सौल ।

प्रतियाँ : पाँच सौ

मूल्य : पाँच रुपये

रक्सौल : दिनांक ११-१-'८१

सूची

सम्पादकीय

'बी० के० शास्त्री' एक ऐसा नाम है, जो रक्सौल में कर्मठता का पर्याय बन गया है। आर्य समाजी संस्कारों में पला-पौसा यह व्यक्तित्व अनेक सद्गुणों से विभूषित है। यह एक बेहतरीन हस्ती है--ऐसी हस्ती जिसने आर्य-जगत् में दुन्दुभि तो बजायी ही है, सामाजिक--सांस्कृतिक क्षेत्र में भी एक कीर्तिमान स्थापित किया है। मधुर भाषी, सबको साथ लेकर चलने वाले श्री शास्त्री ने अपनी कार्य- क्षमता तथा कर्त्तव्य--निष्ठा से सबको सम्मोहित किया है, आकर्षित किया है। चाहे कला-संस्कृति का क्षेत्र हो, या साहित्य-शिक्षा का अथवा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार का—सब में श्री शास्त्री को समान रूप से अभिरुचि लेते देखा जा सकता है।

श्री शास्त्री के इन्हीं सद्गुणों से वशीभूत होकर चम्पारण जिला आर्य सभा ने इनके अभिनन्दन का जो पुनीत निर्णय लिया, उसमें रक्सौल की कई संस्थाएँ, कई व्यक्तित्व सम्मिलित हुए, और श्री बी० के० शास्त्री-अभिनन्दन-पुष्पाञ्जलि' में अपने हृदयोद्गारों द्वारा अथवा अन्य रूपों में श्री शास्त्री के प्रति अपना आभार प्रकट किया है। अगले पृष्ठ श्री शास्त्री के बहुआयामी व्यक्तित्व के बारे में स्वयं बोलते हैं। शास्त्री जी ने रक्सौल से लेकर पटना-दिल्ली तक कितने लोगों का स्नेह अर्जित किया है, कितनी संस्थाओं को अपने कर्तृत्व तथा मूक-निःस्वार्थ सेवा- भाव से प्रभावित किया है, यह पुष्पांजलि उसकी जीती-जागती कहानी है।

अपने कर्त्तव्य के प्रति सतत जागरूक रहनेवाला, विपरीत परिस्थि--तियों में भी काम करनेवाला, आर्य समाज के उत्थान के लिए समर्पित, सरल-सहज जीवन जीने वाला, अनेकों का हितैषी, जिसमें काम करने के लिए अदम्य उत्साह है, जिसमें सदा-सर्वदा जीवन-रस छलछलाता रहता है—यह पुष्पांजलि उसी अनोखे व्यक्तित्व के यशोगान की कहानी है।

—कन्हैया प्रसाद

दो शब्द

प्रकृति के उद्यान में तरह--तरह के फूल खिलते हैं, कोई रंग की आभा से अभिभूत रहता है तो किसी को सुगन्ध सर्वत्र सुरभि बिखेरती रहती है। हर पुष्प की अपनी विशेषता है, उसकी अलग-अलग गुणवत्ता है। एक ओर इन्हीं पुष्पों से प्रकृति की सुषमा सजती है, तो दूसरी ओर इन्सान अपनी जरूरत और उपलब्धता के अनुसार चुन-चुन कर एक गुल-दस्ता तैयार करता है। हमने भी मानव-उद्यान के भिन्न-भिन्न विचारों-भावनाओं और प्रतीकों को एकत्र करने का यहाँ प्रयास किया है और सबों को श्री बी॰ के॰ शास्त्री-रूपी सूत्र में आबद्ध कर, गूंथ--गूंथ कर एक 'माला' तैयार की है। और यह माला उसी व्यक्ति के गले में डालते हैं जिसे हमने एकदम निश्छल, निष्कलुष और निरपेक्ष पाया है। श्री शास्त्री ने तटस्थ भाव से, निष्काम भाव से रक्सौल आर्य समाज की बगिया को सजाया-संवारा है। वह एक ऐसा बागवां है जो सिर्फ पौधा लगाना जानता है, उसे सींचने की कला उसे मालूम है। हम और आप यह स्वीकार कर चलते हैं कि आर्य समाज, रक्सौल का यह मूक सेवक, यह भक्त पुजारी अहर्निश आर्य समाज संस्था की श्री-वृद्धि के लिए ही सोचता आया है, करता आया है और जीवन की अन्तिम सांस तक 'आर्य समाज-आर्य समाज' की रट ही लगाता रहेगा। अस्तु, ऐसे 'आर्य समाजी' का जिला आर्य सभा द्वारा यह 'अभिनन्दन' स्वयं में अभिनन्दनीय है।

और अन्त में महाकवि 'दिनकर' की इस उक्ति—

"जय हो जग में जले जहाँ भी, नमन पुनीत अनल को
जिस नर में भी बसे हमारा नमन, तेज को, बल को। —

की शाश्वत महत्ता तथा अमित इयत्ता के भावों से भरी यह 'पुष्पाञ्जलि' श्री बी॰ के॰ शास्त्री के गले को सुशोभित करे—यही हमारी आकांक्षा है।

'पुष्पाञ्जलि'—प्रकाशन में श्री दुखभंजन प्रसाद और श्री भागवत प्रसाद का प्रयास प्रशंसनीय है। और श्री कन्हैया प्रसाद—सम्पादक द्वय में एक, ने मात्र मुद्रक की हैसियत से पांच दिनों में ही इसे सजाया--संवारा ही नहीं है, प्रत्युत् इस 'पुष्पाञ्जलि' को पठनीय और उपयोगी भी बना दिया है।

सभी सहयोगियों से साभार,

—गगनदेव प्र॰ सिंह

शुभ कामना संदेश

आप श्री बी० के० शास्त्री का अभिनन्दन कर रहे हैं। यह जान कर मुझे हार्दिक प्रसन्नता है। मैं श्री शास्त्री जी के भावी यशस्वी जीवन की सफलता चाहता हूं और चाहता हूँ कि उनके जीवन से अन्य लोगों को भी सामाजिक कार्य करने की प्रेरणा मिले।

रामगोपाल शालवाले
प्रधान-सभा, दिल्ली

"मैं श्री बी० के० शास्त्री, प्रधान मंत्री, चम्पारण जिला आर्य सभा को लगभग ३० वर्षों से जानता हूँ। आप बहुत ही विनम्र, लगनशील व्यक्ति हैं। इनके कर्मठ कार्यों से चम्पारण में आर्य समाज का प्रचार एवं प्रसार बढ़ता गया है। आर्य प्रतिनिधि सभा के सह-मंत्री, अधिष्ठता भू सम्पत्ति विभाग तथा अंतरंग सदस्य के रूप में सद सभा के नियम एवं अनुशासन में रहकर कार्य करते रहे हैं। मैं इनके दीर्घ एवं स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ, जिससे इनके द्वारा मानव कल्याण का कार्य बढ़ता जाये।"
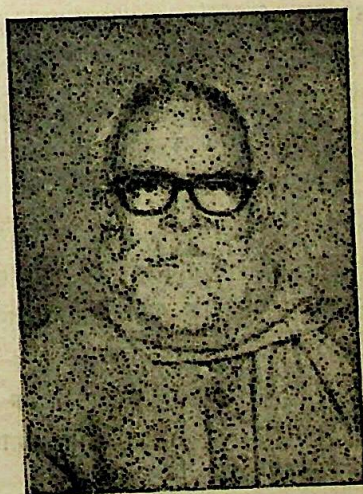
(वासुदेव शर्मा)
अध्यक्ष-सभा, पटना
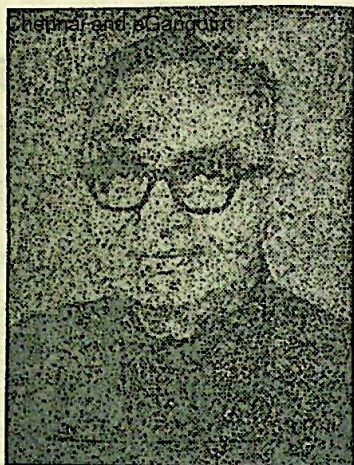
यह महान गौरव का विषय है कि उत्तर बिहार के समस्त वेदानुयायी धर्म-प्रेमी सज्जनों ने सम्मिलित रूप से यज्ञ मय जीवन के पावन प्रतीक, कर्मठता की विमल विभूति श्री बी० के० शास्त्री की निःस्वार्थ सेवाओं एवं अनमोल कृतियों के प्रति श्रद्धा समन्वित–कृतज्ञता ज्ञापन करने का जो सुदृढ़ संकल्प किया है, यह अखिल आर्य जगत के लिए एक आदर्श प्रेरणा स्रोत है ।

"होनहार विरवान के होत चिकने पात" की सदुक्ति श्री शास्त्री जी में ठीक–ठीक चरितार्थ हुई है । श्री शास्त्री जी में वाल्यकाल से ही भविष्णुता के लक्षण प्रतिभासित होते थे । इन्होंने अपने कुशाग्र बुद्धि–वैभव प्रत्युत्पन्नमतित्व, और उच्चतम सदाचार - विचार की गरिमाओं से समस्त आर्य जन - मानस को आकृष्ट करते हुए स्वजन्य भूमि बक्सर, विद्या भूमि वाराणसी, तथा कर्मभूमि उत्तर बिहार, चम्पारण को पूर्ण रूप से देदीप्यामान एवं कृतार्थ किया है । श्री शास्त्री जी का तपोमय आर्य जीवन धन्य और अनुकरणीय है ।

अतः गुरुकुलीय शिक्षा दीक्षा से विभूषित वैदिक वाङ्मय के उद्‌गाता, भारतीय संस्कृति एवं समता के संरक्षक मानवता की दिव्य मूर्ति, उद्‌भ्रान्त जन मानस के दिशा निर्देशक, ऋषि ऋण से उद्धार पाने हेतु आजीवन निष्काम सेवा का व्रत लेकर "विहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा, ज़िला आर्य सभा, तथा आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय, चम्पारण के वेद मूलक उद्देश्यों एवं सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार में अहर्निश योगदान करने वाले आर्यकुल गौरव, विद्या मार्तण्ड, तर्क शिरोमणि, वागीश, वैदिक कर्म प्रचारक, वेद–भास्कर, आर्य समाज के जागरूक सफल प्रहरी कुशल कर्मवीर महर्षि दयानन्द के चरण चञ्चरीक आर्य धर्म धुरीण, श्री बी० के० शास्त्री जी का मैं हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन करता हुआ उनके दीर्घ जीवन की शुभ कामना करता हूँ और आशा करता हूँ कि उनके यज्ञमय आर्य जीवन के फलस्वरूप यह चम्पारण का समस्त आर्य समाज अखिल विश्व का वैदिक दिव्यालोक स्तम्भ बनेगा ।

डा० दुखन राम,
पटना

विहार के आर्य-जगत् के एक जागरूक सेनानी श्री वी० के० शास्त्री का अभिनन्दन जनता के लिए गौरव और आनन्द का विषय है। उनकी महत्ता और गरिमा सर्व परिचित है। महर्षि विश्वामित्र की यज्ञभूमि बक्सर में वे प्रादुर्भूत हुए। विश्ववन्द्य महात्मा गांधी की प्रथम सत्याग्रह-भूमि और भारत--नेपाल के सीमान्त में अपना कर्मक्षेत्र बना कर सर्वदा वे जन--सेवा में संलग्न ही रहे हैं।

ऐसी कर्मठ चेतना से संयुक्त श्री शास्त्री के प्रति अपनी हार्दिक शुभ-कामना प्रकट करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। भगवान उन्हें जीवन-पर्यन्त परोपकारी और जन-सेवी जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दें। साथ ही अपने शुभ संकल्पों को कार्यान्वित करने के लिए उन्हें दीर्घायुत्व प्रदान करें।

सम्पत्ति आर्याणी

हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय।
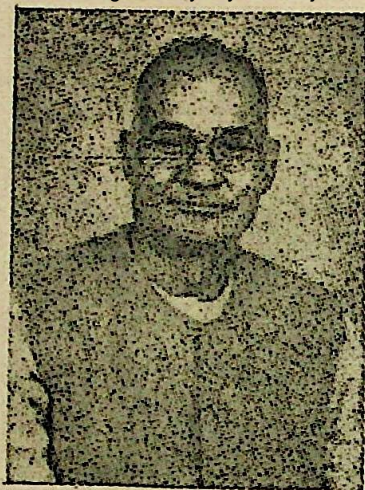
श्री बी० के० शास्त्री को मैं गत २० वर्षों से जानता हूँ। ये सज्जन विद्वान, कर्मठ तथा वैदिक धर्म के सेवक हैं। इनके अथक परिश्रम; अक्षय उत्साह तथा निरन्तर सेवा से चम्पारण तथा नेपाल की तराई में वैदिक धर्म का ध्वज आकाश में अहर्निश फहराता है। इनकी सेवा से न केवल चम्पारण अपितु सारा बिहार प्रदेश प्रभावित है। इनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूँ।

आचार्य रामानन्द शास्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार
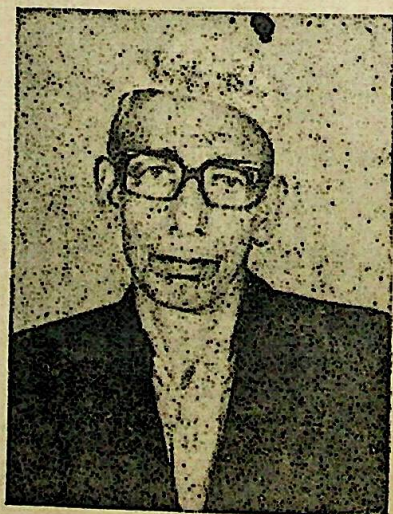
श्रीयुत् बी० के० शास्त्री बिहार आर्य प्रतिनिधि सभा के सभा-मंत्री रह चुके हैं। अभी भी वे संस्था अधिष्ठाता के पद पर कार्यरत हैं। वे सफल अध्यापक और उपदेष्टा हैं। आर्य समाज को उनकी सेवा मिलती रही है। अपने क्षेत्र में जहाँ भी वे रहते हैं आर्य संस्कृति और वैदिक विचार-धारा का स्रोत प्रवाहित करते रहते हैं। चम्पारण जिला आर्य सभा उनके कर्त्तव्य का साकार रूप है।

ऐसे परोपकारी, जन-सेवी जागरूक और कर्त्तव्यपरायण नर-पुँगव के दीर्घायुत्व की मैं शुभकामना करता हूँ।

हरिदास 'ज्वाल', सभा-मंत्री -जहानाबाद

मुझे आज १० वर्षों से शास्त्री जी के सम्पर्क में आने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। मैं इन्हें आर्य समाज के कार्यकर्त्ता के अतिरिक्त एक समाज सेवी, शिक्षा प्रचारक तथा दरिद्रनारायण-भक्त के रूप में विशेषतः जानता हूँ। वे सर्वदा मृदु-भाषी तथा प्रसन्न-चित्त रहते हैं। एक सच्चे तथा कर्मठ आर्य समाजी के अतिरिक्त संगठन करने की इनमें अद्भुत शक्ति है।

लखन प्र० सिंह,

अधिवक्ता, मोतिहारी

श्री व्रज कुमार शास्त्री को वर्षों से जानने का सुयोग हमें रहा है। हमारे लिए यह परम हर्ष का विषय है कि चम्पारण जिला आर्य सभा की ओर से ११ जनवरी, १९८१ को इनके अभिनन्दन का आयोजन किया गया है। इनका उत्कट सेवा-भाव और मृदुल सौम्य स्वभाव सदा से सर्वथा अभिनन्दनीय तथा अनुकरणीय रहा है। इनका आरम्भिक सामाजिक जीवन तो काशी में बीता, किन्तु विगत २७ वर्षों से रक्सौल (पूर्वी चम्पारण) को केन्द्र बनाकर इन्होंने उस समग्र जनपद की जो अभूतपूर्व सेवा आर्य समाज के माध्यम से की है, वह स्वर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि इनके समान कर्मठ, लगनशील और निष्ठावान यदि थोड़े से व्यक्ति भी हो जायें तो पूरे समाज का कल्याण सहज ही सम्पन्न हो सकता है।

हम शास्त्री जी के सुदीर्घ जीवन की हार्दिक कामना करते हैं।

सुमित्ता देवी

भूतपूर्व मंत्री; बिहार सरकार

शास्त्री जी द्वारा समाज एवं विशेष कर आर्य समाज की अथक सेवा के लिए हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। वेतिया के सभी नागरिकों की ओर से शास्त्री जी के प्रति शुभ कामना प्रकट करता हूँ एवं ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ कि ये दीर्घायु हों और समाज की सेवा हमेशा करते रहें।

डा० मदन प्रसाद जायसवाल
अध्यक्ष वेतिया, नगरपालिका

श्री श्रद्धानन्द आर्य
प्रधान आर्य समाज
मलाही
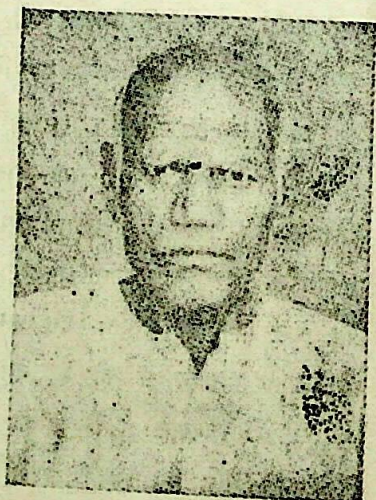
ग्यारह एक एकासी आया, लेकर के शुभ अभियान।
रहें शतायु बी० के० शास्त्री, होवे यह सुन्दर वरदान॥
त्याग-तपस्या की मूरत हैं, बी० के० शास्त्री एक महान।
कर्मठता पर मुग्ध आर्य जन, करें सदा इनका गुण गान॥
सेवक पक्के आर्य समाज के, रखते सदा हैं इसका ध्यान।
हो प्रचार-प्रसार समाज का, पावे सदा विश्व में मान॥

श्री व्रजकिशोर शास्त्री, जो आर्यजगत में श्री बी० के० शास्त्री के रूप में ज्यादा जाने जाते हैं, को मैं व्यक्तिगत रूप से लगभग ६ वर्षों से जानता हूँ। यों उनसे ज्यादा परिचय इधर साढ़े तीन वर्षों से अधिक रहा हैं। मैं इनकी सतत् जागरूकता एव दूसरों को कार्य करते रहने की प्रेरणा किसी न किसी माध्यम से देते रहने का कायल हूँ। इन्होंने नेपाल से सटे विहार को सीमाओं पर आर्य समाज एव महर्षि दयानन्द के सन्देश का महत्तम प्रचार-प्रसार किया है। सीमावर्ती जगह पर रहने के कारण इन्होंने सूदूर-नेपाली चेत्रों में भी प्रचार-प्रसार से अनुप्रणित किया है।
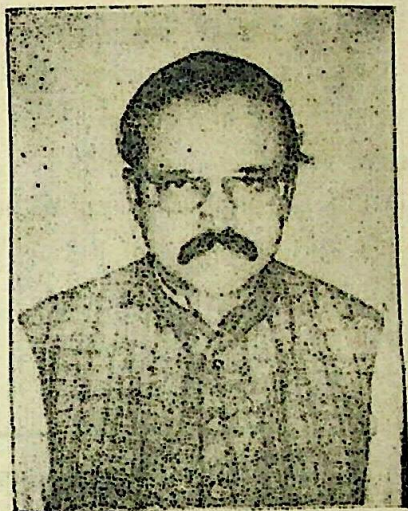
मैं इनके दीर्घ जीवन की कामना ईश्वर से करता हुआ अपनी शुभ कामनायें व्यक्त करता हूँ।

विद्याभूषण प्रसाद
प्रधान, विहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा

श्री बी० के० शास्त्री से मेरा लगभग २५ वर्षों का सम्पर्क है। ये बड़े ही विनम्र धैर्यवान एवं वैदिक धर्म के सच्चे भक्त हैं। इन्होंने अपनी कर्मठता से आर्य समाज रक्सौल एवं जिला सभा चम्पारण को सुदृढ़ बनाया है। प्रारम्भ से ही आर्य समाज मलाही के प्रत्येक कार्य में इनका सहयोग रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा के भिन्न-भिन्न पदों पर रहकर अनुशासित ढंग से कार्य करते रहे हैं। इनके कार्यों एवं व्यवहार से मैं बहुत प्रभावित हुआ और इनके प्रति मेरी दिनों-दिन श्रद्धा बढ़ती गई। मैं इनके उज्जवल भविष्य की शुभ कामना करता हूँ।

शिवशंकर प्रसाद
प्रधान, जिला सभा, चम्पारण

चम्पारण जिला आर्य सभा, विहार राज्य के प्रगतिशील जिला सभाओं में एक है। इसकी प्रगतिशीलता का श्रेय श्री पं० बी० के० शास्त्री जी को है। आदरणीय शास्त्री जी ने वर्षों से इस सभा के मंत्री पद का गुरुत्तर भार सम्भालते हुए पड़ोसी नेपाल देश में भी आर्य समाज के प्रचार का शंखनाद गूँजाया है।

मैं श्री शास्त्री जी के इस अभिनन्दन समारोह के शुभ अवसर पर अपनी शुभकामना व्यक्त करता हूं।

वालेश्वर सिंह 'आर्य'
प्रधान मंत्री
आर्य समाज, बैरगनिया

श्री पं० बी० के० शास्त्री ने नेपाल की सीमा पर समस्त चम्पारण जिले में आर्य समाज के सच्चे प्रहरी के रूप में वैदिक धर्म प्रचार तथा आर्य जाति की सेवा की है। मैं बहुत दिनों से उनके सेवाव्रत से परि-चित हूँ। ऋषि दयानन्द महाराज के सच्चे भक्त और आर्य समाज के कर्मठ कर्मवीर योद्धा हैं। निष्काम सेवा पथ पर दौड़ते हुए आर्य समाज के इस सैनिक की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है। मैं शास्त्री जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

महादेव शरण
भूतपूर्व प्रधान
सम्प्रति-संरक्षक-विहार राज्य
आर्य प्रतिनिधि सभा

शास्त्री जी वैदिक धर्म के दीवाने हैं। आप लगनशील और कर्मठ कार्यकर्ता हैं। २४ घण्टे आपको आर्य समाज की धुन रहती है। आप अहर्निश यही सोचते रहते हैं कि आर्य समाज का प्रचार और प्रसार किस प्रकार हो। आप अत्यन्त सेवाभावी, मिलनसार और मृदुभाषी हैं। मेरा हार्दिक आशीर्वाद है और मङ्गलमय प्रभु से प्रार्थना है कि वे सदा उन्हें स्वस्थ और सानन्द रखें।

जगदीश्वरानन्द
दिल्ली

श्री बी० के० शास्त्री मेरे अभिन्न हैं। एक शिक्षक के रूप में इनकी कर्मठता प्रशंसनीय है। इनकी बहुत बड़ी निष्ठा और योगदान नारी शिक्षा की तरफ हुआ है।

हमारी हार्दिक शुभ कामना है कि श्री शास्त्री जी दीर्घायु हों एवं अपनी सेवा से शिक्षा जगत के विकास में योगदान देते रहें।

डा० आर० आर० कनौजिया, पटना

शास्त्री जी एक कर्मठ शिक्षक हैं। शिक्षा के प्रति शास्त्री जी की गहरी निष्ठा है। ये नारी शिक्षा के महान शुभचिंतक हैं। इनके प्रयास के फलस्वरूप ही रक्सौल में कस्तूरबा बालिका उच्च विद्यालय की स्थापना हो पायी। ये रक्सौल आर्य समाज के दयानन्द विद्यालय, आर्य कन्या विद्यालय के संस्थापक हैं। स्वयं आर्य कन्या विद्यालय के प्रधानाध्यापक के पद पर रहकर ये कन्याओं में शिक्षा का प्रसार करते हुए उन्हें उत्तरदायित्व का भार सम्भालने के योग्य बना रहे हैं।
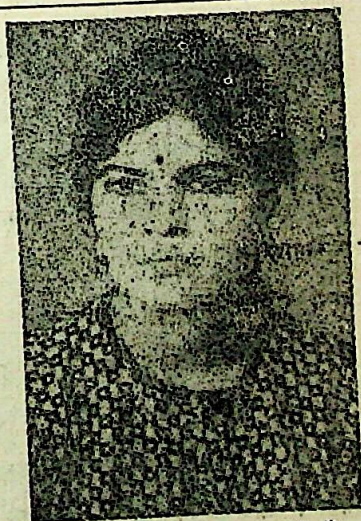
अभिनन्दन-समारोह के अवसर पर हमारी शुभ कामना है कि श्री शास्त्री जी दीर्घजीवी हों और भविष्य में भी सदा अपनी सेवा से नारी-शिक्षा को प्रसारित करते रहें।

शान्ति कनौजिया
सहायक शिक्षा निदेशक,
बिहार मा. शिक्षा कार्यालय, पटना।
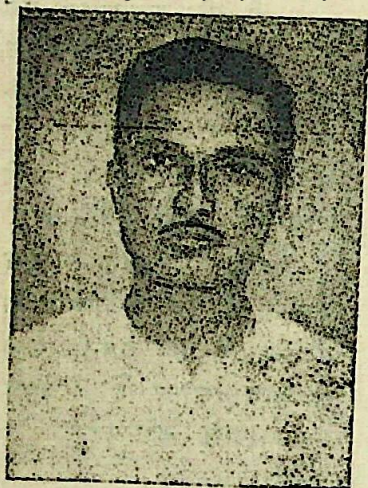
श्री शास्त्री जी से मेरा सम्बन्ध लगभग विगत दस वर्षों से है। मैं शास्त्री जी की कार्य-कुशलता एवं प्रतिभा को देखकर चकित रह जाता हूं। आर्य समाज के उत्थान के लिए श्री शास्त्री जी ने जो सेवायें प्रदान की हैं, उसके लिए यह समाज उनका ऋणी रहेगा। दीर्घायु के लिए परमात्मा से मेरी प्रार्थना है।

हीरालाल ठाकुर, मंत्री
आर्य समाज, मलाही

श्री शास्त्री जी को मैंने एक लम्बे समय से आर्य समाज में रहकर सेवा-रत देखा है। इसका जीता-जागता परिणाम तो सभी के सामने है जैसे आर्य समाज में जहाँ झोपड़ियाँ थीं, वहाँ आज कई पक्के भवन खड़े हैं। यह श्री शास्त्री जी के परिश्रम का फल है। इतनी बड़ी संस्था में इन्होंने बिहारी आर्य पुस्तकालय, दयानन्द विद्यालय एवं आर्य कन्या विद्यालय का नव-निर्माण कर आर्य धर्म का प्रचार किया है, जिसे भुलाया नहीं जा सकता।
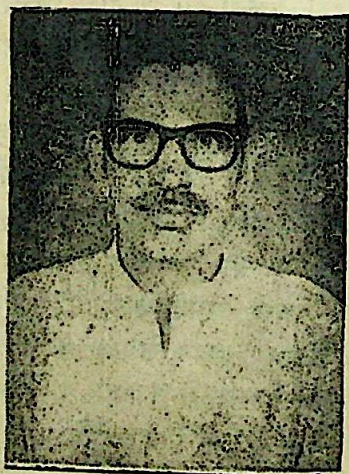
इस अभिनन्दन के अवसर पर इनके दीर्घ जीवन की कामना करता हूं।

बृजलाल अग्रवाल,
मंत्री, मारवाड़ी सेवक संघ
रक्सौल
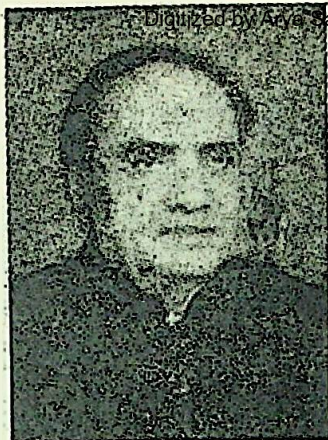
श्री ओमप्रकाश त्यागी
मंत्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, जिनका शास्त्री जी को सदा प्यार मिला है
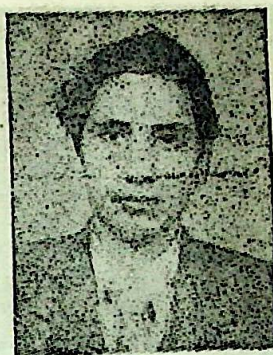
श्री वीर प्रकाश तापड़िया
प्रधान
आर्य समाज, रक्सौल

श्री रामवृक्ष लाल जी प्रधान आर्य समाज बेतिया–शास्त्री जी के एक शुभ चिन्तक

श्री बी० के० शास्त्री के चार आत्मीय
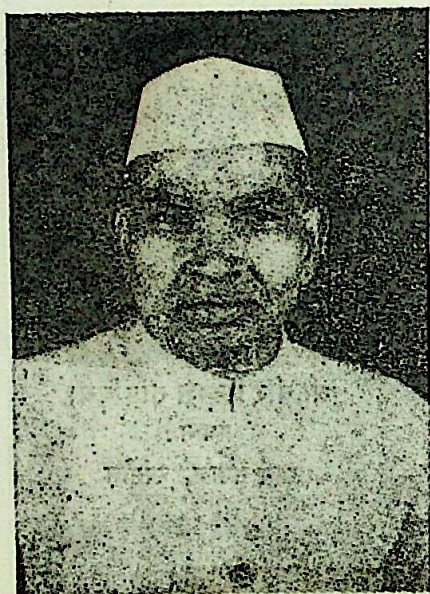
श्री रामनारायण राम लोहिया
भूतपूर्व प्रधान, आर्य समाज, रक्सौल
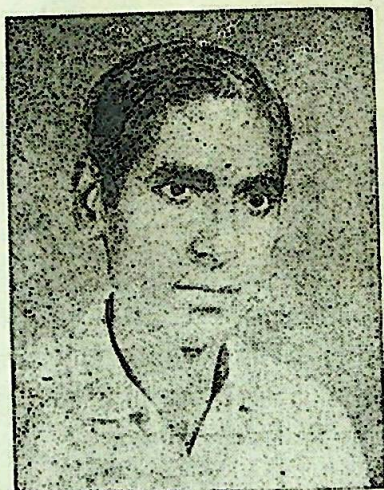
श्री ओमप्रकाश राजपाल
भूतपूर्व मंत्री, आर्य समाज, रक्सौल
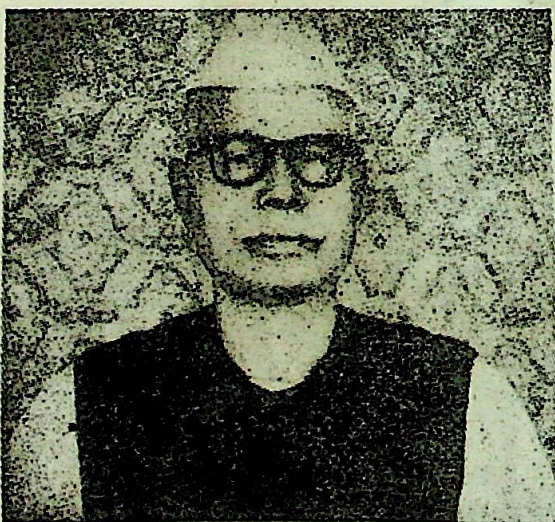
श्री निर्गुण राम
भूतपूर्व प्रधान, आर्य समाज, रक्सौल
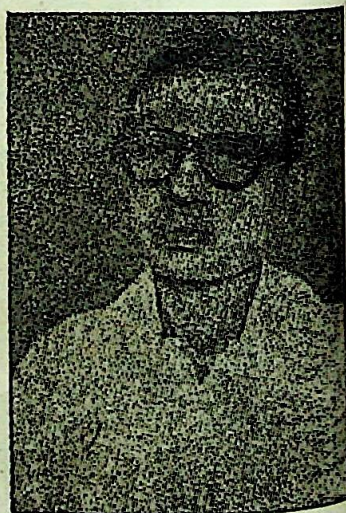
श्री रामचन्द्र आर्य
भूतपूर्व मंत्री, आर्य समाज, रक्सौल
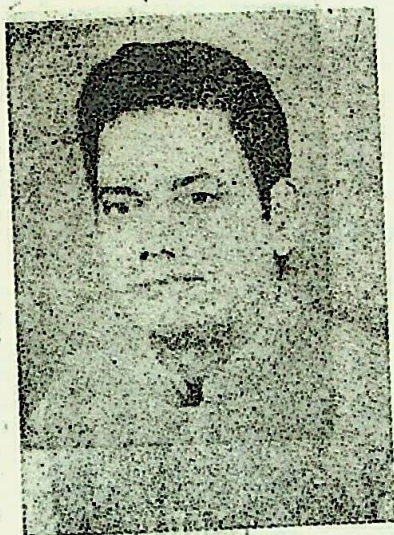
श्री रामज्ञा ठाकुर
शास्त्री जी के अन्तरंग मित्र एवं
कर्मठ आर्य समाजी
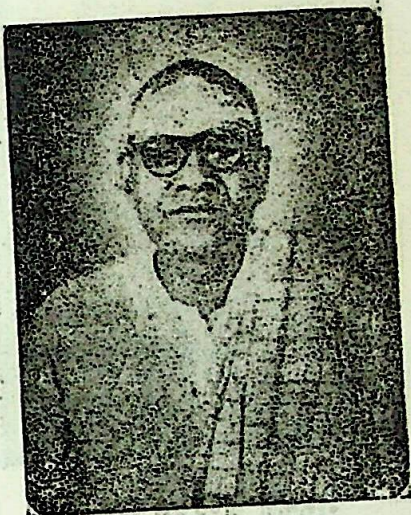
श्री गौरीशंकर प्रसाद
रक्सौल आर्य समाज के
प्रारंभिक सदस्य
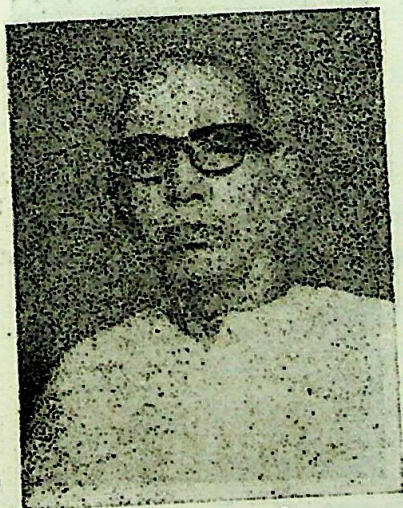
श्री राधा पाण्डे
बिहारी आर्य पुस्तकालय की प्रगति
में सहयोगी

स्व० श्री अखिलानन्द जी
रक्सौल आर्य समाज के
प्रारंभिक स्तम्भ
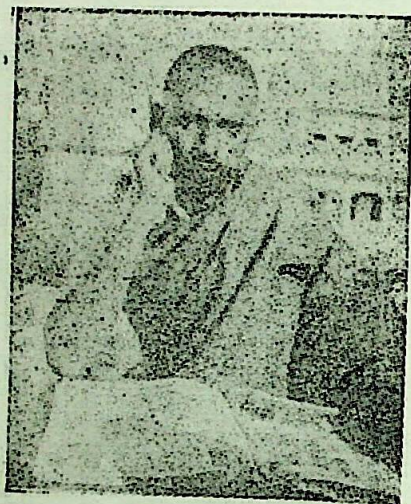
गुरुकुल अध्ययन काल में
मुनि वेष में श्री शास्त्री जी
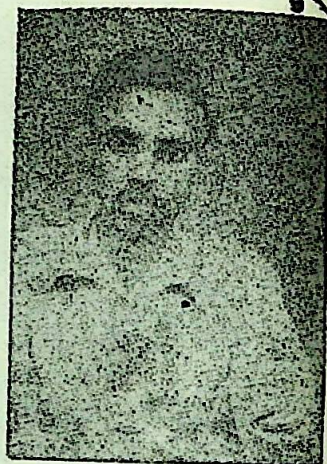
किशोरावस्था में
श्री शास्त्री जी
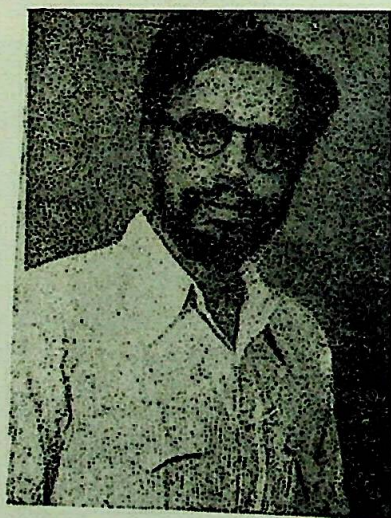
हैदराबाद जेल से मुक्त होने पर
श्री शास्त्री जी

श्री ब्रजविहारी सिंह
श्री शास्त्री जी के अनुज

आर्य समाज के संघटनकर्त्ता आदरणीय श्री बी॰ के॰ शास्त्री

(लेखक)
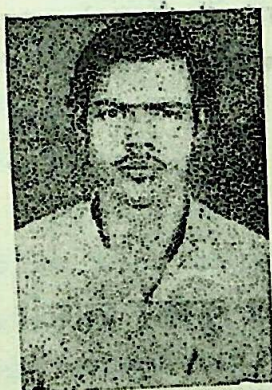
श्रद्धेय श्री बी॰ के॰ शास्त्री जी को मैंने सर्वप्रथम तब देखा था जब मेरी अवस्था १२ वर्ष की थी। शास्त्री जी आर्य समाज घोड़ासहन के वार्षिकोत्सव में आये थे और मैं उस उत्सव में अपने मामा श्री जगेश्वर प्रसाद जी आर्य के साथ गया था। मैंने सबसे पहले आर्य समाज का उत्सव वहीं देखा। शास्त्री जी उस दिन उत्सव की सभा के सभापति थे। मेरे ऊपर उस उत्सव के कार्यक्रम का प्रभाव अपनी अमिट छाप छोड़ गया।

तब से अब तक मैंने शास्त्री जी को बीसियों बार आर्य समाज के उत्सवों में अध्यक्षता करते संस्कारों में पौरोहित्य सम्पन्न कराते ग्राम प्रचार में भाषण देते, आर्य समाज के संघटन का कार्य करते, परस्पर सामाजिक समस्याओं को सुलझाते तथा शास्त्रीय चर्चा में विचार-विमर्श करते हुए देखा है। उनकी आर्य समाज के प्रति निष्ठा तथा संघटन के कार्यों के प्रति पूर्ण उत्तरदायित्व, इन दो गुणों ने उनके प्रति आदर भाव, सम्मान एवं श्रद्धा पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शास्त्री जी आर्य सभा प्रतिनिधि, चम्पारण के वर्षों मंत्री रहे हैं. और उनके मंत्रित्व-काल में विदेश प्रचार (नेपाल में आर्य समाज का प्रचार) तथा चम्पारण मण्डल के कई आर्य समाजों के कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहे हैं। गाँवों में भी आर्य समाजों की स्थापना हुई है। चम्पारण मण्डल के रक्सौल, मोतिहारी, ढाका,

मलाही, बेतिया, नरकटियागंज, प्रभृति प्रमुख आर्य समाजों के वार्षिक उत्सवों तथा वेद - प्रचार सप्ताह के कार्यक्रमों के लिए देश भर के प्रमुख आर्य विद्वानों, संन्यासियों तथा भजनोपदेशकों को अपने प्रभाव से निमन्त्रित करके बुलाते रहे हैं।

मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है कि चम्पारण जिला सभा उनका अभिनन्दन कर रही है। शास्त्री जी का अभिनन्दन होने से चम्पारण जिला के आर्य सदस्य अपने कर्त्तव्य तथा कृतज्ञता का परिचय दे रहे हैं, जो श्लाघ्य है।

मेरी हार्दिक कामना है कि शास्त्री जी शतायु हों और आर्य समाज का कार्यक्रम दिनानुदिन उन्नति को प्राप्त हो। शास्त्री जी मुझसे अत्यन्त स्नेह एवं प्रेम करते हैं और सदा आर्य समाज में कार्य करने के लिए प्रेरणा देते रहे हैं। मुझे उन जैसे विद्वान एवं सामाजिक कार्यकर्त्ता का वरद आशीर्वाद प्राप्त है इसका मुझे गर्व है।

उज्ज्वलन्त कुमार शास्त्री
एम० ए०, रिसर्च स्कॉलर
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय।

श्री बी० के० शास्त्री—एक अध्ययन

समाज में साधारणतया दो प्रकार के मनुष्य,—व्यष्टिवादी और समष्टिवादी, होते हैं। व्यष्टिवादी अपने को सजाते हैं अपने ही लिए, परन्तु समष्टिवादी समाज को ही महत्वपूर्ण मानते हैं। समष्टिवादियों की संख्या अत्यल्प है। ऐसे ही लोगों में श्री बी० के० शास्त्री भी हैं।

जीवन का अधिकाधिक हलाहल पानकर तथा युग के अन्तराल से युग-युग के दर्शन कर, संतप्त मानवता को अमर सन्देश देने में ही शास्त्री जी को परम सुख की अनुभूति होती है।

देव नदी गंगा की पावन गोद ब्रह्मर्षि विश्वामित्र के तपोवन बक्सर में

सन् १६२८ कार्तिक शुक्ल पक्ष में शास्त्री जी का जन्म हुआ (अवतीर्ण हुए) शैशव में ही उदार एवं भक्त माता-पिता, श्री ब्रज कुमार को सुरसरि के तट पर प्रभु-भक्ति में तल्लीन योगेश्वर के संरक्षण में प्रारंभिक ज्ञानार्जन हेतु समर्पित कर महान यश के पात्र बने । होनहार बिरवान के होत चिकने पात वाली कहावत को चरितार्थ करते हुए बालक ब्रज कुमार बाल सुलभ स्वतन्त्र क्रीड़ा का परित्याग कर जीवन के प्रातः काल से ही तपस्वी बन भावी जीवन की तैयारी करने लगे ।

किशोरावस्था आते ही मातृभूमि के आह्वान और समय की पुकार पर स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेजों की विध्वंशक गोली को रोली चन्दन और जेल को खेल समझ सीना तानकर आन्दोलनकारियों की अगली पंक्ति में खड़े थे ।

देश और समाज की पुकार सुननेवालों में ब्रज कुमार जी थे । बक्सर में जन्म लिया । वाराणसी में शिक्षा पायी । शास्त्री की उपाधि से विभूषित होकर देवभाषा संस्कृत और वेदों का मन्थन और मनन किया । जन-सेवा और विश्वबन्धुत्व को ही जीवन का सार समझ आर्य समाज का झण्डा अपने हाथों में उठा लिया । क्रान्तिकारी शास्त्री जी तरुणायी का शंख फूँकते हुए हुंकार उठे—"लहरायेगा, लहरायेगा, हरिओ३म् का झंडा । कालान्तर में पर-तंत्रता, रूढ़िवादिता और अन्याय के विरुद्ध सिंह गर्जन और संघर्ष करते हुए ब्रज कुमार सिंह शास्त्री के रूप में सुविख्यात् हैं ।

श्री ब्रजकुमार सिंह शास्त्री जी में न पुत्र का मोह है न पत्नी के लिए छोह है और न धन के लिए ममता है । दूसरे के बच्चे ही उनके अपने बच्चे हैं और अन्य जन ही उनके अपने लोग हैं । उनके जीवन का परम अभीष्ट जन-सेवा ही है । उन्होंने जीवन में व्रत लिया है—"बहुजन हिताय बहुजन सुखाय, अर्पित हो मेरा मनुज काय ।"

बी० के० शास्त्री जी सुरसरि से गंडकी तक सांस्कृतिक सेतु का निर्माण करते हुए १६५३ में चम्पारण पहुंचे । इनकी विलक्षण क्षमता से इस चम्पारण की भी श्रीवृद्धि हुई । इन्होंने रक्सौल को अविस्मरणीय साहित्यिक

एवं सांस्कृतिक उपहार (विहारी आर्य पुस्तकालय आर्य समाज का भव्य भवन और अनेक सुसज्जित विद्यालय) दियें। मरणोपरान्त भी यहाँ की एक-एक चीज शास्त्री जी की अमर कृति की याद दिलायेगी और डके की चोट पर "शास्त्री जी की जय" का गगनभेदी नारा लगाती रहेगी।

अ० न० चतुर्वेदी
आर्य कन्या मध्य विद्यालय
रक्सौल।

मेरी मंगल कामना

लेखक अपनी पत्नी के साथ

पं० वी० के० शास्त्री भारत के ऐसे वीर सपुतों में से एक हैं जिन्होंने आर्यावर्त को सभ्यता एवं संस्कृति रक्षार्थ और मानवधर्म के प्रचार - प्रसार में अपना जीवन समर्पित कर दिया है। काशी में शिक्षा समाप्त कर इन्होंने काशी गुरुकुल में अध्यापन कार्य प्रारम्भ किया। इसके बाद भारत के पिछड़े क्षेत्र और खासकर नेपाल की तराइयों में बसी जनता को अंध विश्वास, पाखण्ड और शोषण से मुक्त कराने के लिऐ इन्होंने दयानन्द विद्यालय, रक्सौल चम्पारण

के प्रधान का पद सम्भाला और ३० वर्षों से विहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के कर्मठ सेनानी और चम्पारण जिला आर्य सभा के कर्मठ अधिकारी का पदभार सम्भालते हुए इन्होंने त्रस्त मानवता की महान सेवा की है। आर्य जगत के धुरंधर विद्वान पं० जे० पी० चौधरी, काव्यतीर्थ, वाराणसी ने पुराण, मनुस्मृति, सुखसागर आदि ग्रंथों के अवैज्ञानिक और असामाजिक प्रसगों का खण्डन करते हुए पौराणिकों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा था। चौधरी जी के प्रिय शिष्य और प्रातः स्मरणीय महर्षि दयानन्द का सच्चा सेवक बनकर वैदिक धर्म के प्रचार में शास्त्री जी ने जितने महत्वपूर्ण कार्य किये हैं वे चिरस्मरणीय रहेंगे। हजारों संस्कार कराकर तथा सैकड़ों को संस्कार शास्त्री बनाकर इन्होंने समाज को संस्कार–सम्पन्न नवजवान दिया है।

अभिनन्दन समारोह के पुनीत अवसर पर मैं शास्त्री जी के दीर्घायु, समृद्धिशाली और यशस्वी जीवन की मंगल कामना करता हूं।

बनारसी सिंह 'विजयी', मंत्री
संस्कार प्रशिक्षण विद्यालय
मीठापुर, पटना–१

एक संस्मरण

श्री बी० के० शास्त्री उर्फ मुनि जी

काशी गुरुकुल धूपचण्डी वाराणसी के गुरुकुलवासियों में प्राचीन काल के ब्रह्मचारी वेश में—घुटे हुए सिर का बाल, पीला वस्त्र एवं लंगोटधारी सौम्य मूर्ति, शान्त स्वभाव, सेवारत, दिनोरात पठन–पाठन में लीन, मुनि की तरह सुशोभित—ऐसा ही एक व्यक्ति था, जिसे गुरुकुल परिवार मुनि जी कहकर पुकारा करता था, वे थे हमारे अभिन्न मित्र सहयोगी प्रध्यापक श्री बी० के० शास्त्री। मुनि की स्वाभाविक प्रवृत्ति होने के कारण गुरुकुलवासी इन्हें मुनि शब्द से सम्बोधित करने लगे। धीरे-धीरे यह शब्द श्री बी० के० शास्त्री का पर्यायवाची बन गया। बनारस के समस्त आर्य परिवार में मुनि शब्द श्री बी० के० शास्त्री का उपनाम बन गया। आज

भी इन्हें बनारस के लोग "मुनि जी" नाम से याद करते हैं ।

श्री बी० के० शास्त्री जी का छात्र-जीवन से ही हमारे साथ संग रहा है । काशी गुरुकुल में इनका अध्ययन तथा अध्यापन एक साथ चलता रहा । मेरे गुरुकुल के प्रधानत्व काल में इनके अध्यापन का कार्य बहुत सुन्दर, संतोषप्रद, सचाई और ईमानदारी के साथ चलता था, जिससे ब्रह्मचारी-गण बहुत प्रभावित रहते थे । अध्यापन के साथ साथ सम्पूर्ण गुरुकुल की व्यवस्था का भार इन्हीं के ऊपर था । गुरुकुल के अधिष्ठाता पण्डित जे० पी० चौधरी के ये प्रिय पात्र थे । ब्रह्मचारियों की सेवा में ये हमेशा तत्पर रहते थे । ब्रह्मचारियों के बीमार पड़ जाने पर स्वयं अपने हाथों उनकी सेवा किया करते थे । एक बार एक ब्रह्मचारी को हैजा हो गया, उसे बचाने में इनका असफल प्रयास रहा । अपनी जान की परवाह न कर स्वयं उसका पैखाना, कै, साफ करते रहे, किन्तु उसे बचा न पाये । ये गुरु-कुल परिवार में हमेशा पूज्य रहे । ये गुरुकुल के अधिष्ठाता पद को भी सम्भाल चुके हैं । ईमानदारी, सचाई, तथा सच्चरित्रता के लिए गुरुकुल में प्रसिद्ध थे । इनकी सची वीरता का लोहा पण्डित जे० पी० चौधरी भी मान चुके थे । इनकी जानकारी में कोई चरित्रहीन व्यक्ति गुरुकुल में ठहर नहीं पाता था । इन्होंने व्याकरण शास्त्र की शिक्षा नैष्ठिक ब्रह्मचारी पं० विद्याभानु उपाध्याय से तथा कर्मठता की शिक्षा पण्डित जे० पी० चौधरी से पाई है । आज हमलोगों से दूर रहते हुए भी जो कुछ आर्य समाज के प्रसंसनीय कार्य ये चम्पारण जिला में कर रहे हैं, हमारे लिए गौरव की बात है । हमारा एक भाई दूर देश में रहकर आर्य समाज की सेवा कर रहा है, इससे हमारा हृदय प्रफुल्लित है ।

मैं अपने परम सहयोगी अभिन्न मित्र श्री बी० के० शास्त्री के अभि-नन्दन समारोह के शुभावसर पर अपनी शुभकामना प्रकट करता हूं तथा परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं कि भगवान इन्हें चिरायु बनावें ।

रामदयाल शास्त्री
भूतपूर्व प्रधानाचार्य,
काशी गुरुकुल धूपचण्डी
ईश्वर गंगी, वाराणसी

सम्मान सुमन

श्री से शोभित रवि समदीपित श्री बी० के०. शास्त्री सर्वविदित।
पंडित प्रधानाध्यापक जिलार्य मंत्री श्रुति मंडित ॥
ब्रह्मा विष्णु और रुद्ररूप जिनके प्रिय ओ३म् सहायक हैं।
जनता में चहुंदिशि यश जिनका जिलार्य सभा के नायक हैं ॥
कितने घर कितने महलों में, कितने गाँवों और शहरों में।
शोभित कर दिया समाज और ध्वज ओ३म् गगन की लहरों में ॥
रजनी हो या दिवस काल या ज्येष्ठ दुपहरी शीत काल।
शास्त्रार्थ और वेद प्रचारों से कर रहा ध्वस्त पाखण्ड जाल ॥
स्त्री और शुद्र दलित जन को, ठगते विधर्मी जन-मन से।
जीवन कितने का बचा दिया, जो शुद्धिचक्र अवलम्बन से ॥
कीर्ति उनकी, आयु उनकी हो दीर्घ दीर्घतर दीर्घतमम्।
सेवक समाज शिवालय के हो, श्रेष्ठ श्रेष्ठतर श्रेष्ठतमम् ॥
वाणी विद्या बुद्धि विवेक, सब कुछ समाज को अर्पण है।
मेरे उस पूज्य पितृ शखा को, सादर सम्मान समर्पण है ॥

सत्यार्थी सदानन्द शास्त्री
साहित्याचार्य, विद्यावाचस्पति
गुरुकुल महाविद्यालय, वैरगनिया
(सीतामढ़ी)

मंगल कामना !

आर्य प्रवर—निष्काम कर्म सेवी प्रचारक ।
श्री —मन् लगनशील धर्मधुरीण सुधारक ।
पंडित —विद्वतादरणीय सुशील प्रभावी ।
व्रज – विलास गो-सेवक, वेद-धर्म अनुरागी ।
कुमार —सत् पथगामी, प्रवल तपस्वी ।
शास्त्री —आगमनिगम प्रवक्ता सुदृढ़ मनस्वी ।

डा० देवेन्द्र कुमार सत्यार्थी
दयानन्द सेवाश्रम मुसाढ़ी,
नालंदा ।

शास्त्री जी दीर्घजीवी हों !

बक्सर शास्त्री जी की जन्मभूमि रही है । कर्मभूमि रक्सौल होते हुए भी आर्य समाज बक्सर को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने का श्रेय आदरणीय शास्त्री जी को है । दिव्यानन्द सरस्वती आदि अनेक उपदेशकों को अपने प्रयास से बक्सर भेजकर वेद का प्रचार एवं आर्य समाज के कार्यों को आपने आगे बढ़ाया । शास्त्री जी जब भी बक्सर आए हैं आर्य समाज मन्दिर के निर्माण के लिए प्रेरणा दी है और उन्हीं के उद्बोधन से आज आर्य समाज मन्दिर का दोमंजिला भवन खड़ा है । शास्त्री जी ने अपने जीवन में जितना कार्य किया है उनको हम शब्दों में नहीं बांध सकते ।

आर्य समाज बक्सर के सभी सदस्य एवं अधिकारीगण शास्त्री जी के दीर्घ जीवन एवं स्वास्थ्य की कामना करते हैं, जिससे वेद का प्रचार-कार्य आगे बढ़े और वैदिक घोष 'कृण्वन्तो विश्वार्यम्'' को हम सफल बना सकें ।

शम्भु प्रसाद आर्य
उप-मंत्री, आर्य समाज, बक्सर

स्मृति के झरोखों से

श्री भरत प्रसाद आर्य

(लेखक)

१९५० में आर्य समाज विद्यालय में मेरा नामांकन कराया गया। समाज में कई पेड़ थे। एक झोपड़ी एवं एक चरपासी था। दो शिक्षक 'चंदनवाले तथा दाढ़ी वाले थे"। वे शिक्षक अन्यत्र चले गये। दर्जनों शिक्षक आये और चले गये, एक मात्र मेरे गुरु श्री रामचन्द्र प्रसाद गुप्त को छोड़कर, जो संप्रति विद्यालय में ही कार्यरत हैं।

प्रथम साक्षात्कार

सूचना मिली -- आज एक योग्य शिक्षक आयेंगे। योग्य शिक्षक के स्वागत के निमित्त मैंने आठ कठिन शब्द चुने।

साधारण धोती - कुर्ते में आवेष्ठित शरीर, प्रशस्त ललाट, घनी भौंवें, निरञ्जन आँखें, जिनकी असाधारणता में एक अनिर्वचनीय आत्मीयता छलकी पड़ती थी।

वातावरण शांत था। उनकी आँखें निरख और परख रही थीं। प्रश्नों की बौछार मैंने प्रारंभ की। उन्होंने शांत भाव से उतर प्रदान किये।

"संध्या के संपूर्ण मंत्रों को सुनाओ?" सहसा एक प्रश्न गूंजा। वातावरण में नीरवता छा गई। हम बगलें झांकने लगे। आर्य समाज विद्यालय

में पढ़ते तो थे, किन्तु गायत्री मंत्र के अतिरिक्त अन्य मंत्रों की जानकारी नहीं थी । बड़े प्रेम से प्रत्येक की कापी पर मंत्रों को लिखकर सस्वर पाठ कर कल सुनाने को हिदायत दी ।

सीमातीत प्रसन्नता

मुझे याद है प्रथम अभिनय "गोहत्या - निरोध आन्दोलन" में मुझे एक ऐसे व्यक्ति का रोल मिला था, जिसमें अपने एक साथी को, जो बूचड़खाने में मैनेजर है—धिक्कारता है । मंच के लिए चार चौकियाँ थीं । श्री प्रेमचन्द्र जी सभापतित्व कर रहे थे । "यह मत कहो कि जग में कर सकता क्या अकेला" एवं "वह शक्ति हमें दो दया निधे कर्त्तव्य मार्ग पर डट जाएं' का शास्त्री जी ने सर्वप्रथम मुझसे गान कराया था । संध्या के संपूर्ण मंत्रों का पाठ मैंने सस्वर मौखिक किया था । मेरे दोनों हाथ पुरस्कार से भरे थे । शास्त्री जी ने बाल्यवास्था में मेरे ऊपर अमिट स्नेहिल रेखाएं खीच दी थीं ।

प्रेरक गुण

उस समय मेन रोड के पूर्व इक्के - दुक्के मकान थे । शास्त्री जी आर्य समाज की सुन - सान एक छोटी झोपड़ी में रहते थे । रात - रात भर जगकर कार्य करते देखा है उन्हें । "Where there is a will there is a way" कुछ समयोपरान्त देखा -- नव निर्माण का कार्य प्रारंभ है । प्रत्येक वर्ष विद्यालय का पारितोषिक वितरणोत्सव एवं आर्य समाज का वार्षिकोत्सव तथा नवनिर्माण चल रहा है । एक बार उन्हें वार्षिकोत्सव पर १०३° बुखार में कार्य करते देख मैं विह्वल हो गया था ।

समाज की पढ़ाई समाप्त करने के बाद लघु सिद्धान्त कौमुदी पढ़ाकर एवं सातवें वर्ग की तैयारी कराकर स्थानीय हाई स्कूल में नामांकन कराने ले गये । उस समय मुझे ज्ञात हुआ कि उनके प्रेरक तत्व एवं चारित्रिक गुणों के कुछ अंश का समावेश मुझ में भी हो गया है ।

सदा संयत, सदा दत्तचित्त

मेरी स्मृति के चित्राधार में उनके अनेक चित्र हैं । उनमें अद्भुत

सादगी तथा सरलता है।

आत्मरक्षा सामान्य मनुष्य का स्वभाव है। १६७२-७३ में कतिपय कारणों से कुछ मतभेद हो गए। कुछ ही दिनों के बाद चुनाव हुआ। मैं रक्सौल आर्य समाज का प्रधान मंत्री चुन लिया गया। मंत्री पद की अवधि में मुझे ज्ञात होता था कि शरीर तो कार्य कर रहा है किन्तु आत्मा अन्यत्र है। २७ वर्षों की अवधि में अनेक झंझावातों, आँधी और तूफान प्रबल वेग से आए और चले गये। पर शास्त्री जी का निर्माण कार्य चलता रहा। 'पर' के लिए 'स्व' का उत्सर्जन एवं चरैवेती चरैवती का अनोखा मिलन।

समाज की भव्य अट्टालिकाओं को देखता हूं। उनसे संबन्धित चम्पारण की कई संस्थाओं पर दृष्टिपात करता हूं तो प्रत्येक में उत्तरोत्तर विकास ही पाता हूं। दूसरी ओर उस तपस्वी को निरखता हूं तो वही धोती-कुर्ता, निश्छल आँखें। सोचता हूं शास्त्री जी ने क्या पाया, क्या खोया और स्वयं अतीत की गहराइयों में खो जाता हूं।

आदरणीय पं० व्रजकुमार जी शास्त्री—एक संस्मरण

विद्यावृद्ध, ज्ञानवृद्ध मित्रवर पं० व्रजकुमार जी शास्त्री को आज से नहीं वरन् जब वे 'काशी गुरुकुल, धूपचण्डी, वाराणसी' में पूज्य पं० जे० पी० चौधरी जी काव्यतीर्थ शास्त्रार्थ महारथी के संरक्षण में अध्ययन करते थे तब से मैं जानता हूं। आप मेरे उपनयन गुरु पूज्य पं० विद्याभानु जी उपाध्याय, व्याकरणाचार्य से व्याकरण अध्ययन करते थे। आप मितभाषी गम्भीर, सच्चरित्र व सौम्य प्रकृति के व्यक्ति हैं। आर्य समाज के प्रति आपमें विशेष लगन, श्रद्धा व प्रचार की धुन है। आपका विशेष प्रचार-क्षेत्र विहार प्रान्त है। आप विहार प्रान्त के 'वक्सर' के ही निवासी हैं। आपका वैवाहिक जीवन सुखमय नहीं रहा। परमपिता परमात्मा आपको चिरायु करें, जिससे आप वैदिक धर्म का अत्यधिक प्रचार कर सकें।

शिवपूजन सिंह, कुशवाहा
गोरा छपरा (सारण)

एक अभिनन्दन

बीच हमारे कर पदार्पण, वैदिक ज्योत जगा दिया ।
केवल चिन्तन समाज ही में, जीवन सर्व लगा दिया ।।
ध्यान बस इसी में समझा, समाज गाड़ी तीव्रतर हो ।
स्त्री पुत्रों की छूटे ममता, त्याग तप ही दृढ़तर हो ।।
कार्य अध्यापन का भी, करते रहे अति लगन से ।
अभीष्ट है, संतुष्ट हैं, छात्रों के जीवन जागरण से ।।
भिज्ञ हैं, लिखा-पढ़ी, मंत्री का पद संभालने में ।
नम्रता गुण सर्वोपरि है, कर्त्तव्य अपना पालने में ।।
दक्ष हैं, पुरोहिती संस्कार कार्य संचालने में ।
नहीं पग रहा पीछे कभी समाज - गुत्थी सुलझाने में ।।
है याचना परमात्मा से, आप स्वस्थ दीर्घायु हों ।
सूर्यदेव की कामना यह सफल सब मनोकामना हों ।।

सूर्यदेव प्रसाद
पुरानी गुदरी, बेतिया

अभिनन्दन

पं० रामदेव शर्मा
आर्योपदेशक
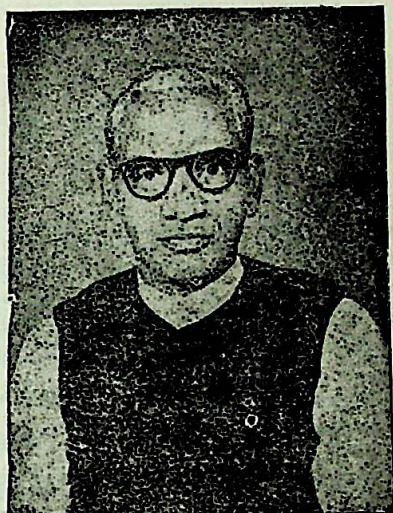
चम्पारण के आर्य मुनि को शुभ यह मेरा अभिनन्दन ।
जिनका जीवन धर्म, समाज, राष्ट्र पर है अर्पण ।।
बक्सर तज काशी में आये, अध्यापन हित गुरू के पास
पर शास्त्री आचार्य किए, काशी गुरुकुल में अपना वास
गुरुकुल के आचार्य बने, सेवाहित अपना जीवनधार
हैदराबाद सत्याग्रह में कष्ट उठाये अनेकन बार
कितने झंझट – तूफानों को, हँस कर किये सहन
जब राष्ट्र धर्म पर आई विपदा किये न्योछावर तन-मन-धन
काशी से विहार आये चम्पारण के मंडल में
रक्सौल नाम का केन्द्र बना, आर्य गठन के मंडल में
अनाथ, बिधवा, गऊ, अछूत का सुन पातें हैं कहीं रुदन
द्रुतगामी बन रहा हित, झट कार्य सफल करते पूरण
कुरीतियों के उन्मूलन – हित, शुद्धि प्रचार में हैं अग्रगण
अनेक इनके उपकारों का, कहाँ तक मैं करूँ वर्णन
संध्या अथवा अग्निहोत्र, सादा, सौम्य सदाचार जीवन
प० बी० के० शास्त्री नाम है उनका, विहार के हैं महान धन
ऐसी मैं महान आर्यमूर्ति का, करता हूं नित्य अभिवादन
भगवान इन्हें शतायु रखें, बस "दिव्यकवि" का यही कथन।

बी० के० शास्त्रिणे प्रति

आ० पं० गङ्गाधर शास्त्री
व्याकरणाचार्य महोपदेशक
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
पटना-४
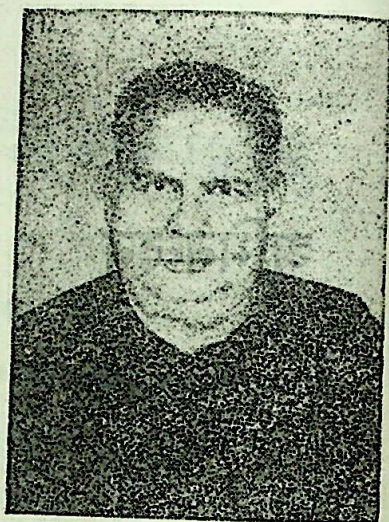
बी० के० शास्त्री महा धन्यः
सर्व शास्त्र विलक्षणः ।।
यस्य वै महती निष्ठा ऽऽ
र्यसमाजे विराजते ।।१।।
चम्पारण्ये सुरम्येच
बिहारे सकले तथा ।
वेद — धर्म प्रचाराय
दीयते तेन जीवनम् ।।२।।
शतायुःस भवदे, धीमान
स्वस्थ ओमनुकम्पया ।
जने जने भवेत् श्रद्धा
साधु शास्त्रि जनं प्रति ।।३।।
सर्वेशं जगदाधारं
चराचर नियामकम् ।
अर्चेऽटं सच्चिदानन्दं
शास्त्री गङ्गाधरोहृदा ।।४।।
अभिनन्दन वेलायाम्
श्रद्धापुष्पं ददाम्यहम् ।
शरीरेण दुरस्थोऽपि
हृदयेन पुरःस्थितः ।।५।।

श्री बी० के० शास्त्री के प्रति मेरे उद्गार

(लेखक)

श्री बी० के० शास्त्री वीर कुंवर सिंह की धरती बक्सर में जन्में, काशी गुरुकुल से व्याकरण शास्त्री एवं एलाहाबाद बोर्ड से मैट्रीक की परीक्षा पास कर अब वे साहित्यालंकार प्रशिक्षित हैं। इनका विवाह भी हुआ था लेकिन गुरुकुलीय वैदिक शिक्षा तथा आर्य विद्वानों के सत्संग एवं महर्षि के त्यागपूर्ण जीवन के प्रभाव ने उन्हें वैवाहिक जीवन की रंगरेलियों में रमने नहीं दिया और सात वर्षों में ही उनके सातों कर्म बीते और तब बीतरागी, वेद–प्रचारक तथा महर्षि के सिद्धान्तों के प्रति उनकी अटूट आस्था ने उन्हें गुरुकुल वैरगनिया में प्राध्यापक के रूप में ला पटका। लेकिन चन्द वर्षों के बाद ही रक्सौल के आर्य बन्धुओं की आर्य समाज के प्रति सच्ची निष्ठा ने आर्य समाज, रक्सौल के संरक्षक के रूप में उन्हें जकड़ लिया और आर्य समाज, रक्सौल एक सच्चा एवं निस्वार्थी आर्य पाकर इस जिले में हर तरह से बढ़ा-चढ़ा तथा अनोखा बन गया। इसका पूर्ण श्रेय हमारे शास्त्री जी को है।

आर्य समाज, रक्सौल के दिनानुदिन विकास से ही ये सन्तुष्ट नहीं हुए तथा अपना कार्य-क्षेत्र विस्तृत करने के लिए चम्पारण जिला आर्य सभा का गठन यहाँ के गण्यमान्य आर्य बन्धुओं के सहयोग से किया। इनके अथक प्रयास का ही फल है कि चम्पारण (सम्मिलित) के कोने–कोने में

आज पचास से अधिक आर्य सभाओं की स्थापना उन्होंने अपने तथा जिला सभा के प्रचारकों से करायी।

इन्हें जब भी आर्य समाज तथा हिन्दू धर्म के ऊपर अत्याचार के खिलाफ जान की बाजी लगाने की आवश्यकता पड़ी, इन्होंने मुख नहीं मोड़ा तथा नादिरशाही निजाम हैदराबाद के कुचक्रों के विरोध में सत्याग्रह में भाग लेकर आपने छः माह तक कैद भी भुगती है।

मेरा परिचय इनसे जबसे हुआ हैं मैंने आर्यत्व वैदिक विचारधारा तथा वेद एवं आर्य समाज के प्रचार–प्रसार एवं उसके निमित्त सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजनों के अतिरिक्त अन्य किसी कार्य में रुचि लेते नहीं देखा हैं।

आर्य समाज को अमर बनाने तथा वेदों की ज्योति निरंतर जलती रहे—के प्रयत्न में इनका जो अदम्य योगदान है, उसके लिये चम्पारण निवासी एवं आर्य समाज इनका आजीवन आभारी रहेगा।

मैं इनके दीर्घायु की कामना करता हूं!

योगेन्द्र प्रसाद, अधिवक्ता
उप-प्रधान
जिला आर्य प्रतिनिधि, चम्पारण

श्री वी॰ के॰ शास्त्री-एक कर्मठ आर्य समाजी

लेखक—श्री हरिप्रसाद शास्त्री
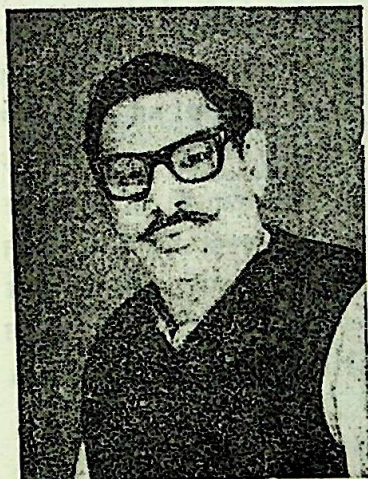
१९५७ के जनवरी महीने में श्री पं० वी० के० शास्त्री से रक्सौल में साक्षात्कार हुआ। भवन के अभाव में पर्णकुटी में ही निवास करते थे। आर्यसमाज को केवल जमीन थी। इनके विशाल व्यक्तित्व तथा मधुर स्वभाव के कारण मैं मंत्र मुग्ध हो गया। रात्रि में भोजनोपरान्त वर्त्तालाप प्रारंभ हुआ। पंडित जी ने कहा कुछ शास्त्र चर्चा होनी चाहिए। मैं भी चर्चा के लिए उत्सुक ही था। अतः मैंने स्वीकृति प्रदान कर दी। इन के निकट रह कर मैंने अनुभव किया कि इनके हृदय में आर्यसमाज के प्रचार की प्रचन्ड ज्वाला जल रही है। एक मात्र उद्देश्य इनके जीवन का वेद प्रचार एवं ऋषिऋण से मुक्ति पाना है।

इनके जीवन में आर्यसमाज के पथ पर अनेक कठिनाइयाँ आयीं, किन्तु इन्होंने शान्त और गंभीरता से सदा मुकाबला किया।

श्री वी० के० शास्त्री ने अथक प्रयास एवं प्रवल पुरुषार्थ से रक्सौल आर्यसमाज के भव्य भवन का निर्माण कराया तथा अनेक परिवार की कन्याओं का विद्यालय के माध्यम से सुसंस्कृत आर्य बनाने का अनुपम कार्य किया।

ऐसे महान व्यक्ति का अभिनन्दन बहुत पूर्व ही होना चाहिए था। किन्तु देर आयद दुरुस्त आयाद के अनुसार मैं इनका हार्दिक स्वागत करता हूँ। श्री वी० के० शास्त्री का अभिनन्दन आर्यसमाज का अभिनन्दन है। श्री पं० वी० के० शास्त्री के अभिनन्दन की पूर्ण सफलता की मंगल कामना करता हूँ।

हरिप्रसाद शास्त्री
बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा
पटना—४

शास्त्री जी—एक मिशनरी व्यक्तित्व

गुरुकुलीय शिक्षा समाप्त करते ही श्री बी० के० शास्त्री ने अपना समस्त जीवन आर्य समाज की सेवा में समर्पित कर दिया। इन्होंने अपना प्रधान कार्य-क्षेत्र भारत--नेपाल की सीमा-भूमि पर अवस्थित रक्सौल नगरी को बनाया, जहाँ से विहार तथा नेपाल में वैदिक धर्म का प्रचार प्रभावशाली ढंग से किया जा सकता है। आज जो रक्सौल तथा चम्पारण जिला में आर्य समाज की दुन्दुभि बजती है, उसके मूल में श्री शास्त्री जी की साधना तथा कर्त्तव्य-परायणता निहित है। इनकी प्रेरणा से रक्सौल में आर्य समाज के विद्यालय चल रहे हैं। ऐसे मिशनरी व्यक्ति से आर्य समाज को बड़ी-बड़ी आशाएं हैं। मैं इनके शतायु जीवन की कामना करता हूं तथा आशा करता हूं कि शास्त्री जी अपने लक्ष्य की प्राप्ति में सफल सिद्ध होंगे।

रवीन्द्र शास्त्री
मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, बिहार

एक निरभिमानी व्यक्तित्व

श्रद्धेय श्री बी० के० शास्त्री जी, मंत्री चम्पारण जिला आर्य सभा एक बहुत ही सुयोग्य एवं कर्मठ मंत्री होते हुए अत्यन्त ही उदार और निराभिमानी व्यक्ति हैं। इन्होंने अपने जीवन में अब तक जो संघटनात्मक एवं वैदिक धर्म प्रचार–हेतु कार्य किया है, वह प्रशंसनीय हीं नहीं वल्कि उनकी सच्ची लगन का प्रतीक है। वे जीवन का अधिकांश समय इस वैदिक मिशन का प्रचार और प्रसार में लगा कर सब के प्रिय–भाजन बन गये हैं। हमलोग इनके कार्यों से संतुष्ट होते हुए इनसे आशा करते हैं कि अपने शेष जीवन में और अधिक तत्परता एवं सत्य निष्ठा से कार्य करते रहेंगे, जिससे अत्यधिक लोग लाभान्वित हो सकें।

हम लोग सभी पदाधिकारी एवं सदस्यगण इनके दीर्घायु के लिये परमात्मा से शुभकामना करते हैं।

सुन्दर प्रसाद आर्य
प्रधान, आर्यसमाज, लौरिया

अभिनन्दन पुष्पावली

स्वामी मनीषानन्द सरस्वती

गुरुकुल, बैरगनिया
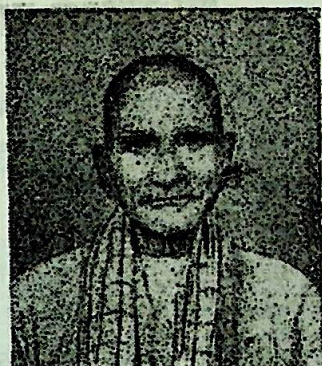
श्री वी० के० शास्त्री जी हम, सब अति कृतज्ञ प्रियवर तेरे ।
ब्रह्मा हो तुम आर्य समाज, चम्पारण के हे प्रिय मेरे ॥१॥
जनजन जनपद के जाग्रत हैं, तव स्नेह सुधा वाणी से ।
कुल प्रसन्नचित्त हैं प्रिय तव अमृतवानी से ॥२॥
मान आर्यों का तुम हो, हे आर्य शिरोमणि प्यारे ।
रत रहते दिन रात सदा तुम, सेवा हित जीवन को वारे ॥३॥
शास्त्री की उपाधियुत हो, शास्त्रार्थ महारथी बनकर तुम ।
स्त्री पुरुष सभी मानव में, फैलाते निज कीर्ति कुसुम ॥४॥
महामहिम महिमा है तेरी, छायी रहीं सर्वत्र चेत्र में ।
होकर जन सेवा में तत्पर, घूम रहे हो नगर नगर में ॥५॥
दया दीन-दुखियों पर रखना, इस शुभ गुण को हो धारे ।
यज्ञ हवन के अति प्रेमी हो घर-घर यज्ञ कराते ॥६॥
कोटि कोटि नर नारी को, वैदिक संस्कार कराया ।
अपने शुभ उपदेशों से है, मानव उन्हें बनाया ॥७॥
भिन्न-भिन्न नगरों ग्रामों में, आर्य संस्कृति परचारा ।
नंन्दन वन की ज्योति जगाकर वैदिक नाद बजाया ॥८॥
दयानन्द के सैनिक बन, पाखड प्रपंच मिटाया ।
नतमस्तक ऋषियों के हो, शुभ वैदिक मार्ग बनाया ॥९॥
परमात्मा के प्रियपुत्र हे, तव अभिनन्दन करते हैं ।
त्र्यम्बक शुभ करे तुम्हारा, जो जन-जन में रमते हैं ॥१०॥

अभिनन्दन गुरूवर पं० बी० के० शास्त्री का

गुरुवर पं० बी० के० शास्त्री का अधिक परिचय मैं क्या दूँ? जो भी लिखा जाय वह थोड़ा ही कहा जा सकता है। यह रक्सौल आर्य समाज साक्षी है, और इन्हीं के परिश्रम की देन है कि यह विशाल भवन आज देखने को मिल रहा है। इनके कार्य-कलाप और सेवा से सारा आर्य जगत पूर्ण परिचित है। इनसे सर्वप्रथम वाराणसी काशी गुरुकुल में सन् १९५८ ई० में सम्पर्क हुआ। मैं काशी गुरुकुल में पढ़ रहा था। अत पूज्य गुरुवर स्वर्गीय पं० जे० पी० चौधरी जी काव्यतीर्थ का भी स्मरण आ जाता है। उन्हीं की कृपा से मैं काशी गुरुकुल में प्रवेश पा सका। प० बी० के० शास्त्री हमारे गुरु हैं। हमारे पूज्य पिता जी (पं० रामदेव शर्मा) के सहयोगी एवं परम मित्रों में एक हैं। इनका स्नेह और श्रद्धा हमारे पूरे परिवार के साथ रहा है, आगे भविष्य में भी रहेगा। इन्हीं की कृपा से हमलोग वाराणसी से चम्पारण जिला में रक्सौल आये। मैं इन्हीं की छात्रछाया में रहकर आर्य समाजी भी बना और इनके आशीर्वाद से मैं एक होमियोपैथ सफल चिकित्सक हूं। मैं इनका हृदय से अभिनन्दन करता हूं और ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इन्हें दीर्घायु रखें, जिससे हम लोगों का और समाज का कल्याण होता रहे।

डा० जनार्दन शर्मा, आर्य, समस्तीपुर

शास्त्री जी ने मुझे आर्य समाजी बनाया

मैं व्रजकुमार शास्त्री को बचपन से जानता हूँ। ये प्राचीन परम्परानुसार विद्याध्ययन हेतु गुरुकुल काशी गए। मुझे उन्हीं के प्रयास से अपने बच्चों को काशी गुरुकुल में प्रवेश कराने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उन्हीं के प्रभाव से मेरा सारा परिवार आर्य समाज की तरफ अग्रसर हुआ। उन्होंने मुझे ही नहीं अपने जीवन में अनेक व्यक्तियों तथा परिवारों को आर्य समाज की तरफ मोड़ा। मैं आशा करता हूँ कि उनका जीवन आर्य समाज के लिए है तथा रहेगा। ऐसे आत्माओं का मान करना सत्य प्रचार करना है। जिसके आचरण से अपने समाज तथा देश का कल्याण हो, वैसे व्यक्ति की मान-मर्यादा करना ही वैदिक धर्म का सच्चा प्रचार है। इससे अगली पीढ़ी को प्रेरणा मिलती है। अतः ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह इन्हें दीर्घायु प्रदान करें।

विश्वनाथ आर्य, वानप्रस्थी, बक्सर, आर्य समाज

मांगलिक कामनाएं

(कवि)
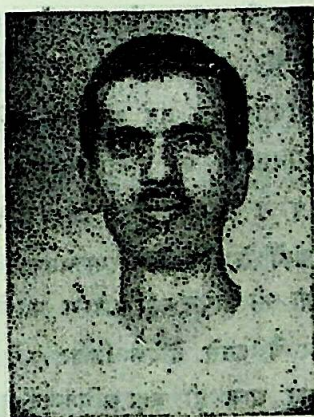
आर्य सामाजिक संस्थायें जो हैं इस चम्पारण में सारी,
उनमें ही रक्सौल आर्य संस्था का अपना महत्व है भारी।
पूर्वी और पश्चिमी चम्पारण जनपद दोनों एक मिलाकर,
कार्यक्रम संपादित करता है दोनों में हाथ बढ़ाकर।
मन्त्री पद पर रहकर जिसके हैं अपना दायित्व निभाते,
वे हैं श्री व्रजकुमार जी शास्त्री कुशल कार्यकर्त्ता कहलाते।
पूर्व काल से ही सामाजिक सेवा ये करते आये हैं,
इसीलिये सर्वाधिक जीवन में यश कीर्ति कमा पाये हैं।
इन्हीं आर्य नेता का हम सब आज कर रहे अभिनन्दन हैं,
पुलकित हैं सब आर्य सभासद हर्षोल्लसित सबका मन है।

ज्यों भारत नेपाल राष्ट्र का है प्रहरी रक्सौल कहाता,
त्यों शास्त्री जी आर्यसभा द्वय चम्पारण के हैं उद्गाता।
सभी समाजों में उत्सव की क्रमबद्ध योजना बनाते,

वैदिक धर्म प्रचार कराकर हैं समाज उत्थान कराते ।
वेद प्रचार सप्ताह में भी ये ख्याति-लब्ध विद्वान बुलाकर,
जीवन ज्योति जगाते सबमें हैं उनका उपदेश कराकर,
तपोनिष्ठ श्री रामचन्द्र जी जो इस समाज के निकट पास हैं,
सामाजिक उत्थान कार्य में देते इनका सदा साथ हैं ।
उस प्रचार के कुशल प्ररणा स्रोत मनुज का अभिनन्दन है.
पुलकित हैं सब आर्य सभासद हर्षोल्लसित सबका मन है ।

जब से ये रक्सौल आर्य संस्था के बन अध्यापक आये,
जनमत से ये दयानन्द विद्यालय का निर्माण कराये ।
अनुशासित हो पूर्ण रूप से छात्र यहाँ हैं शिक्षा पाते,
हो उत्तीर्ण सर्वाधिक अंकों से इसकी गरिमा चमकाते ।
आर्यवीर दल की शाखा भी प्रथम यहाँ प्रारम्भ कराये,
जिसमें युवा वर्ग आकर थे इनसे वैदिक शिक्षा पाये ।
उस विद्यालय के संरक्षक का आज हो रहा अभिनन्दन है,
पुलकित हैं सब आर्य सभासद हर्षोल्लसित सबका मन है ।

आय-व्यय की पूर्ण व्यवस्था रहती इनके हाथों है सारी,
पत्राचार समय पर करने में रखते तत्परता भारी ।
संस्कार की सुभग सूचना जहाँ कहीं से हैं ये पाते,
भेज वहाँ पर आर्य पुरोहित यज्ञ कार्य सम्पन्न कराते ।
ऋषिवर दयानन्द के हैं ये परमभक्त कट्टर अनुयायी,
जिन्हें आज हम सभी दे रहे श्रद्धायुक्त शत बार बधाई ।
कार्यनिष्ठ उस आर्यवीर को आज कोटिशः अभिनन्दन है,
पुत्री यह 'माधुरी आर्या' का भी भेंट-स्नेह-वन्दन है ।

ओ३म् प्रभु से यही 'तपस्वी' मांग रहा वर मंगलकारी,
वेद, धर्म की रक्षा में शास्त्री जी हों शत वर्ष सुखारी ।

श्री तपस्वी राम आर्य

आर्यनिवास, नरकटियागंज

श्री बी॰ के॰ शास्त्री के प्रति

१–श्रीमान आपके अभिनन्दन का, सुन्दर समाचार पाकर ।
साहस कर बैठा हूँ सहसा, कुछ लिखने का अति हरषाकर ॥
सब भाँति सुयोग्य सुशिक्षित हो, ऋषि दयानन्द के अनुयायी ।
विद्वानों में सम्मानित हो, जन–जन प्रिय सदा विजय पाई ॥

२–चम्पारण जिला आर्य सभा का मन्त्री पद स्वीकार लिया ।
वैदिक धर्म प्रचारार्थ, अटल व्रत उर धार लिया ॥
उर में कटु भाव न किंचित है, पर पण्डित पूज्य प्रतिष्ठित हो ।
हे ! आर्य जनों के प्रिय नेता, सब आर्यजनों के परिचित हो ॥

३–अनवरत कार्यरत लगनशील, सेवा व्रतधारी, ऋषि भक्त ।
हे ! सुवाग्मी लेखक ललाम, हे ! आर्य जाति सेवक सशक्त ॥
हो रहा आपका अभिनन्दन, सुन करके हर्ष अपार हुआ ।
दिल का मुरझाया सुमन खिला, कविता का रंग सवार हुआ ॥

४–हे ! प्रिय आप पर अनुकम्पा सच्चिदानन्द भगवान करें ।
यह पावन घड़ी आज आई हम मिल करके सम्मान करें ॥
निरखें जीवन के शत बसन्त दिक् दिगन्त होवे यश उज्ज्वल ।
अभिलाषा "स्वरूपानन्द", की यह मानव–जीवन करो सफल ॥

स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

गांधी नगर, दिल्ली

श्री बी० के० शास्त्री : सम्मानार्थ दो शब्द-सुमन

शुरू - शुरू में श्री बी० के० शास्त्री के बारे में जितना जाना - सुना था, सम्पर्क में आने पर जितना देखा, उसके आधार पर यही महसूस किया कि इस सीधे - सादे, सरल और प्रभावशाली व्यक्ति में बहुत सारे गुण हैं । सन् १९५४-५५ या '५६ रहा होगा कोई साल । मैं श्री बी० के० शास्त्री के सम्पर्क में तब आ चुका था ।

वर्त्तमान आर्य समाज का यज्ञशाला होने के कारण आर्यसमाजी रूप तो था, स्वरूप नहीं था । जैसा आज आप देख रहे हैं । गड्ढे, खेत गुजरने के लिए पगडंडी और प्रांगण में फूस की चंद झोपड़ियाँ । संभवतः आर्य समाज का विद्यालय । और उसमें तैनात दो-तीन शिक्षक, लंबी -- लंबी चोटी, खड़ाऊँ या चट्टी वाले, जिनके हाथों में हर क्षण 'लबेदे' यानी छड़ियाँ रहा करती थीं । खैर, ये बातें भी उस समय अतीत की बन चुकी थीं । और आर्य समाजी रूप बदलता जा रहा था और स्वरूप निखरने लगा था । कभी बाहर, कभी झोपड़ी के अंदर लम्बी - लम्बी मेजें डालकर, अगल – बगल में कुर्सियाँ रखकर, आल्मारियों में पुस्तकें सजा--संभाल कर, वाचनालय तथा पुस्तकालय का रूप दिया जा चुका था । मैं जब-जब पुस्तकालय में कुछ उलटने-पलटने या पुस्तकें लेने जाता, शास्त्री जी से बातें होतीं । खूब जम कर होतीं । मैं देखता, इस व्यक्ति में पूरी लगन, अदम्य उत्साह, कर्म के प्रति निष्ठा और कर्त्तव्य-परायणता कूट - कूट कर भरी हुई है । यदि उनका सहयोग किया जाय, आर्य समाज का उत्थान होगा । नगर का विकास होगा । जिसके माध्यम से शैक्षिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा वैदिक जागरण – जागृति होगी । और हम सब की उन्नति भी । और सहयोग हुआ । स्व० श्रीलाल भरतिया, स्व० श्री अखिलानंद जी, रामाज्ञा ठाकुर, लोहिया जी, रामचन्द्र जी आर्य,

भरत जी तथा अन्य कई व्यक्ति इनके सहयोगी बन कर आए। इन व्यक्तियों ने केवल सहयोग ही नहीं दिया, बल्कि आर्थिक सहायता भी दी। और दूसरों से भी दिलवायी। फलतः एक -- एक कक्ष बन कर यह भवन बना। दयानन्द विद्यालय. आर्य कन्या विद्यालय, सभाभवन, पुस्तकालय, और भविष्य में भीं विकास की ढेर सारी संभावनाएँ हैं। अगर हम इस व्यक्ति का सहयोग सतत करते रहें, यह अपने कर्त्तव्य से कभी विमुख नहीं होगा। आज यह व्यक्ति सामाजिक कार्यों का सफल निर्वाह करते हुए, एक योग्य शिक्षक प्रधानाध्यापक, बहुतों का हितैषी, धर्मप्रणेता और सफल जीवन-भोगी है। थाने से जिले तक सारे वैदिक कार्यक्रमों में जिसकी प्रेरणा काम कर रही है। और प्रांत में भी जिसके सहयोग की अपेक्षा अधिकारीगण करते हैं।

जो खुद कर साहित्यकार न होते हुए भी साहित्यिक रुचियों का धनी है और गतिविधियों का अग्रणी। हिन्दी साहित्य परिषद् की स्थापना से लेकर उसके द्वारा संपन्न सारे कार्यक्रमों में जो प्रेरणास्रोत बना रहा। मुझ जैसे कई साहित्यकारों को सदैव साहित्यिक सहयोग तथा सुझाव देता रहा। जिसकी बदौलत वीणाकला परिषद् और वंदनाकला परिषद् की वीणा के तार झंकृत हुए।

धर्म के प्रति जिसके मन की आस्था वैदिक ज्वाला बन कर धधक रही है। जिसमें अंध- विश्वास- आडम्बर जलता जा रहा है। यज्ञ की अग्नि वेद-ज्ञान की ज्योति बनकर जीवन-संदेश दे रही है। जिसके ताप से निःसृत सहज-सरल जीवन-रस छलछलाता हुआ जन-जन को सींचित कर रहा है। प्रांगण में गूँजते वेद मंत्र, घर-घर में मुखरित वेद-कथाएँ इस साधु-पुरुष का यशोगान कर रही हैं। ऐसे लगनशील व्यक्ति के सम्मान में मुझ जैसे अकिंचन साहित्यकार के दो शब्द। श्री बी० के० शास्त्री को ईश्वर शतायु करे।

श्री तुलसी प्रसाद 'अरुण'

रक्सौल।

जैसा फक्कड़ आये थे, रह गये वैसा ही फक्कड़

—श्री श्याम नारायण वर्मा

कोका (गया)

शास्त्री जी का अभिनन्दन हो रहा है—यह जानकर बड़ा अजूबा-सा लगा। आज अभिनन्दन का आयोजन, आम तौर पर, जिन लोगों का, जिन के द्वारा, जिस प्रकार से धड़ल्ले से हो रहा है उसके अभिनन्दन के प्रति मुझ जैसे आम आदमी की आस्था को बड़ा आघात लगता है। अतः पूर्ण निःस्वार्थ भाव से जिन लोगों ने शास्त्री जी ऐसे एक मूक और प्रचार से दूर रहनेवाले व्यक्ति के अभिनन्दन का आयोजन आज की दुनिया में किया है, पहले मैं सर्वान्तःकरण से उन्हीं का अभिनन्दन करता हूं।

मेरे लिये सही तो यह है कि श्री वी० के० शास्त्री एक ऐसी हस्ती है, जिसका मात्र अनुभव किया जा सकता है और इसीलिये उनकी व्याख्या-हेतु सभी शब्द अपर्याप्त से लगते हैं।

सुदूर बक्सर से आकर लाखों रुपये जमा किये और मुक्त हाथों उन पैसों को वो दिया रक्सौल में ही। स्वयं के लिये न आर्थिक आकांक्षा न राजनीतिक चाल। जैसा फक्कड़ आये थे रह गये वैसा ही फक्कड़। जिस व्यक्ति ने रक्सौल के सामाजिक जीवन को एक मोड़ दिया, सांस्कृतिक जीवन में जान फूंकी और साहित्यिक जीवन को गति प्रदान की, उसे न किसी पद की मांग है और न किसी ओहदे की चाह। ममता और आनत्व की प्रतिमूर्ति। महान अद्भुत।

महाकवि 'दिनकर' की पंक्तियों में बरवस ही दुस्साहसपूर्ण परिवर्तन के बाद जो स्वरूप हुआ लगता है उस के द्वारा शास्त्री जी की आंशिक व्याख्या हो सकी है (कुछ हद तक):—

'हृदय का निष्कपट पावन क्रिया का
दलित ताड़क, समुद्धारक नगर का
'समाजी' है बड़ा बेजोड़ शास्त्री
'दयानन्द' का है वी० के० शिष्य पक्का।"

श्री बी० के० शास्त्री के प्रति आभारी हूँ

(लेखक)

बहुत दिन हुये—सन् १९५३ का साल, श्री व्रज कुमार शास्त्री का रक्सौल नगरी में आगमन हुआ। रक्सौल में आर्य समाज द्वारा खरीदी गयी जमीन खाली पड़ी हुई थी। उसी जमीन पर कुछ झोपड़ियाँ बनीं और यह प्राथमिक शिक्षा का केन्द्र बना—नाम हुआ दयानन्द आर्य विद्यालय। शास्त्री जी की देख-रेख में यह विद्यालय उत्तरोत्तर प्रगति करता रहा। प्राथमिक विद्यालय आज माध्यमिक विद्यालय में परिणत हो गया है। झोपड़ी से महल बना—इसका श्रेय शास्त्री जी को हीं है। विद्यालय प्रगति पर है। यह शास्त्री जी की कार्यक्षमता, अनुभव और कर्त्तव्यनिष्ठा का प्रति फल है। रक्सौल में कन्या माध्यमिक विद्यालय का अभाव खल रहा था। कुछ वर्ष हुए कस्तूरबा बालिका उच्च विद्यालय की स्थापना हो गयी। इस विद्यालय की स्थापना में शास्त्री जी का अधिक सहयोग रहा। शिक्षण संस्थाओं के अलावें अनेक सामाजिक संस्थाओं से भी इनका सम्बन्ध रहा है। ये कुशल शिक्षक तथा कर्मठ समाज-सेवी के रूप में माने जाते हैं। यहाँ इनके शिक्षण-काल की अवधि इतनी लम्बी है कि यहाँ ये सभी वर्गों के लोगों में घुल मिल-सा गये हैं और श्रद्धा के पात्र बन गये हैं। एक शिक्षक के नाते शास्त्री जी के साथ हमारा सम्बन्ध इतना पुराना हो गया है कि वे हमारे परिवार के ही सदस्य जैसे लगते हैं। सुख-दुख में उन्होंने सदैव ही मेरी सहायता की है—अपना सहयोग दिया है। सन् १९७८ ई० के
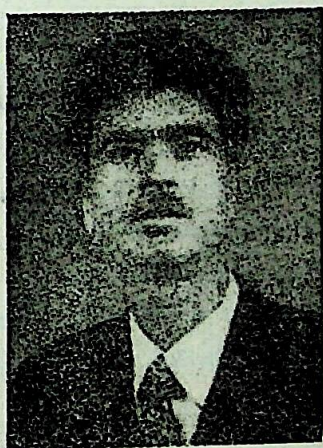
मार्च महीने की बात है। मेरी द्वितीय पुत्री की शादी की तिथि निश्चत हो चुकी थी, समय कम था। मैं कुछ परेशान-सा था। लेकिन शास्त्री जी की सहायता तथा सहयोग से शादी अच्छी तरह सम्पन्न हो गयी। इनकी सहायता तथा सहयोग के लिए मैं इनका आभारी हूं।

शास्त्री जी जिस विद्यालय में प्रधानाध्यापक के पद पर हैं, उसी विद्यालय में मेरी पत्नी श्रीमती शकुन्तला सिन्हा सहायक शिक्षिका के पद पर हैं। प्रायः उस विद्यालय में मुझे जाने का अवसर मिलता है। मैंने पाया है कि शिक्षक-परिवार को वे सदैव अपना समझते हैं—उनके सुख-दुःख के भागी हैं। कर्तव्य-परायणता, प्रशासनिक क्षमता आदि गुण इनमें हैं। ये निश्चय ही श्रद्धा के पात्र हैं। मैं इनके दीर्घ जीवन की शुभ कामना करता हूं।

श्री सतीशचन्द्र सिन्हा
शिक्षक,
हजारीमल उच्च वि०, रक्सौल।

एक लगनशील व्यक्तित्व

मैं श्री वी० के० शास्त्री, प्रधान मंत्री चम्पारण जिला आर्य समाज को बचपन से ही जानता हूं। आप बहुत ही विनम्र एवं लगनशील व्यक्ति हैं। हमारे यहाँ शास्त्री जी बहुत बार संस्कार में एवं साप्ताहिक सत्संग में सम्मिलित हुए हैं। आर्य समाज की प्रगति की ओर बढ़ाने एवं प्रचार कार्यक्रम को द्रुतगति देने की प्रेरणा दी है। श्री शास्त्री जी के प्रयत्न से नई बाजार, आर्य समाज स्थापित हुआ है। अतः मैं इनके दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं

अयोध्या प्रसाद, मंत्री
आर्य समाज, नई बाजार, बक्सर

शास्त्री जी को मेरा शतशः अभिनन्दन

लेखक

श्री बी० के० शास्त्री से प्रथम मिलन सन् १९५३ में बैरगनिया गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर बिजली की चका-चौध में हुआ। उनकी कार्य-क्षमता से मेरे हृदय में बिजली कौंध गई। सोचा कि यह व्यक्तित्व रक्सौल आर्य समाज द्वारा संचालित दयानन्द विद्यालय में आकर कर्य करे तो विद्यालय एवं समाज तीव्र गति से विकास कर सकता है।

उस समय मैं विद्यालय का प्रधानाध्यापक था। विद्यालय का गुरुतर उत्तरदायित्व मेरे ऊपर था। स्थानीय व्यक्ति होने के कारण विद्यालय का चतुर्दिक विकास करने में मैं असमर्थ था।

उस समय डी० ए० वी० स्कूल बैरगनिया के अधिकारियों से शास्त्री जी का मन-मुटाव हो गया था. जिसकी चर्चा श्री रामनारायण राम लोहिया, श्री रामाज्ञा ठाकुर तथा श्री देवनन्दन जी से हुई। मेरे समक्ष प्रस्ताव आया कि विद्यालय का प्रभार शास्त्री जी को सौंप दूँ तो उन्हें रक्सौल लाया जा सकता है।

शास्त्री जी रक्सौल आए। कार्य-भार मैंने सौंपा। प्रथम दिन के क्रियाकलाप से ही मुझे ऐसा लगा कि यह व्यक्ति अपने माध्यम से समाज एवं विद्यालय को आलोकित करेगा।

विद्यालय को गति देने के निमित्त स्व पं० राधा कृष्ण मिश्र 'विजय' के सभापतित्व में संचालन-समिति का निर्माण हुआ। श्री प्रेमचन्द्र जी भू० पू० राज्य मंत्री, श्री श्रीलालजी भरतिया, श्री रामनारायण राम लोहिया, श्री शंकरलाल जी मस्करा, श्री सत्यनारायण भरतिया, श्री शंभूदयाल; श्री अखिलानंद, श्री देवनन्दन प्रसाद, पं० रामवचन मिश्र वैद्य के नेतृत्व ने विद्यालय के कृतित्व को प्रखर कर दिया।

जीर्ण-शीर्ण विद्यालय की कोठरियों के नव-निर्माण के निमित्त प्रचंड गर्मी, भीषण सर्दी, मूसलाधार वृष्टि में जीतपुर बागवाना, सेमरा, अमलेखगंज इत्यदि स्थानों से खर बाँस कैसे लाया गया, इसकी अलग गाथा है।

समाज की गतिविध के निमित्त प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव का आयोजन हुआ। प्रथम अभिनय गोहत्या निरोध स्व० श्री प्रेमचन्द्र के सभापतित्व में अभिनीत हुआ। छात्रों की प्रतिभा देखकर लोगों ने मुक्तकंठ से सराहना की। मुझे जहाँ तक याद है कि संध्या के संपूर्ण मंत्रों का पाठ कर एवं अभिनय में प्रथम स्थान प्राप्त कर मेरे शिष्य श्री भरत प्र० आर्य ने दर्शकों को संमोहित कर डाला।

विद्यालय की स्वीकृति, शिक्षकों की नियुक्ति एवं प्रशासनिक सुधार के लिए रक्सौल-पटना तक काफी दौड़धूप की गई, जिसमें शास्त्री जी के साथ श्री रामाज्ञा ठाकुर आदि ने अथक परिश्रम किया। उक्त समय शिक्षा निदेशक डा० धर्मेन्द्र ब्रह्मचारी ने मुक्त हस्त से सहयोग किया।

रक्सौल का भी साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक क्षेत्र शास्त्री जी से अछूता नहीं रहा। बिहारी आर्य पुस्तकालय, दयानन्द विद्यालय, दयानन्द मध्य विद्यालय, आर्य कन्या विद्यालय, हिन्दी साहित्य परिषद; आर्य वीर दल, वीणा-कला परिषद्, नटराज सेवा संगम, कस्तूरबा बालिका उच्च विद्याल, गोशाला इत्यादि संस्थाओं के निमार्ण-संचालन आदि में शास्त्री जी का प्रत्यक्ष रूप से हाथ है।

रक्सौल की सम्मस्यायों के अतिरिक्त पंजाव में हिन्दी रक्षा आंदोलन प्रारंभ हुआ। तो मुझे, मोहनलाल आर्य, रघुनाथ आर्य लक्ष्मण प्रसाद आर्य, रामचन्द्र प्रसाद को भेजने का श्रेय उन्हें ही था।

सच पूछा जाय तो आर्य समाजी विचारों से मेरे परिवार को परि-पक्व करने का श्रेय शास्त्री जी को ही है। इनके विचारों तथा चारित्रिक क्रिया-कलापों से प्रभावित होकर मेरी स्व० धर्मपत्नी ने एक बार कहा था—"शास्त्री जी को आपके विचारों और संस्कारों को नया मोड़ देने के लिए भगवान ने भेजा है। यदि वे राम हैं तो आप लक्ष्मण। आप ऐसा कार्य न करें जिससे राम का हृदय विदीर्ण हो।"

अतीत पर दृष्टिपात करने पर जीवन की मधुर और कटु कई स्मृतियाँ मेरे मानस-पटल पर अंकित हो आयी हैं। आज समाज की भूमि पर निर्मित यह भव्य भवन शास्त्री जी का कृति--स्थल है, जो युगों तक लोगों को नव जीवन प्रदान करता रहेगा।

ऐसे व्यक्तित्व को मेरा शतशः अभिनन्दन!

श्री रामचन्द्र प्रसाद गुप्त, शिक्षक

दयानन्द विद्यालय, रक्सौल।

बाबूजी का वात्सल्य

(लेखक)
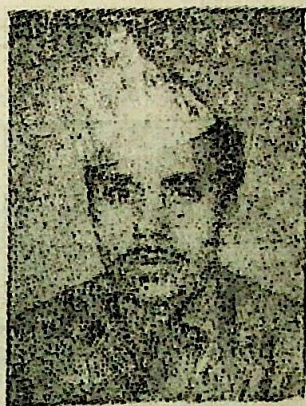
मैं हर्षदेव नाम से जाना जाता हूं । यह नामकरण मेरे बड़े पिता जी द्वारा ही हुआ है। मैं भी अपने नाम की मर्यादा बनाये रखने के लिये आठों याम प्रयास करता रहता हूँ । परमपिता परमेश्वर की अनुकम्पा से और पूज्य बड़े पिताजी (श्री बी० के० शास्त्री) की अपार कृपा से मैं अब तक सहर्ष रहता आया हूं । मैं अपने बड़े पिताजी को ही बाबूजी कहता हूँ।

मेरा जन्म सुरसरि की गोद में अवस्थित ब्रह्मर्षि विश्वामित्र की पावन भूमि बक्सर में हुआ । प्रभु की असीमा दया से मुझे अपरिमित धूप और विशुद्ध वायु मिली, ठीक उसी प्रकार मुझे पूज्यवर बाबूजी से असीम प्यार मिला । जलद जल से पृथ्वी को आप्लावित करता है। ठीक उसी तरह मैं अपने बड़े पिताजी के स्नेह से सराबोर हूँ । अपनी मां की ममतामयी गोद छोड़ते ही मेरे श्रद्धा-धाम बाबू जी की दूध से धोयी सुनहली गोंद मिली । दया सिन्धु की दया प्राप्त कर ही किसी को मेरे बड़े पिता के सदृश दयालु और ममत्व की प्रतिमूर्ति बाबूजी मिलते हैं । मैंने अपने माता-पिता को छोड़ दिया और अपने पावन स्नेहस्नात बाबूजी का लाड़ला बन कर उन्हीं के साथ रहने लगा । मेरे माता-पिता के दायित्व का निर्वाह वहीं करने लगे । उनके अथक प्रयास से मैंने मैट्रिक तक की शिक्षा और औद्योगिक प्रशिक्षण पाया । बाबूजी के अपार स्नेह और विशुद्ध वात्सल्य के परिणामस्वरूप ही मैं उनका दत्तक पुत्र हूँ । मुझे उनकी सेवा करने और उनके साथ रहने में नैसर्गिक सुख की अनुभूति होती हैं । मैंने भी उनके साथ बक्सर को छोड़ रक्सौल को ही अपना कर्मक्षेत्र बनाया । बाबूजी के प्रति जितनी मेरी श्रद्धा उमड़ती हैं, उसके चौगुने बाबूजी का स्नेह मेरे लिये उमड़ता जा रहा है । बाबूजी का उत्तराधिकारी मैं ही हूँ । उन्होंने आवश्यक सरकारी पंजीयनों में-जैसे भविष्यनिधि और बैंक लेखा में मुझे ही अपना उत्तराधिकारी स्वीकृत किया है। भगवान से मेरी प्रार्थना है कि मुझे उतना बल और समय दें कि मैं पूर्ण मनोयोग से उनकी सेवा कर सकूं । उनके अभिनन्दन के शुभ अवसर पर मैं इन शब्द-सुमनों से उनका अभिनन्दन करते आनन्द से फूला न समाता हूं ।

श्री हर्षदेव सिंह

संस्मरण
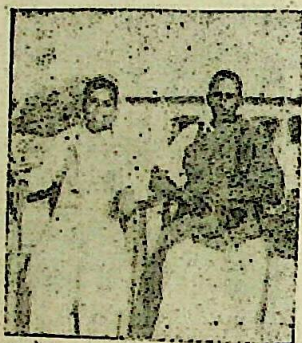
अपने जीवन साथी अभिन्न मित्र श्री रामधनी सिंह वकील के साथ श्री बी० के० शास्त्री

परम प्रिय सुहृद् श्री बी०के० शास्त्री के अभिनन्दन के शुभ अवसर पर हमारी शतशः पुष्पांजलि अर्पित है।

श्री पं० बी० के० शास्त्री काशी गुरुकुल धूपचंडी के हमारे सहपाठियों में हैं। इनकी-हमारी मित्रता कृष्ण-सुदामा सरीखी थी। हमेशा हम दोनों एक दूसरे को अपना न्योछावर करने के लिए तैयार रहते थे। शरीर हम दो थे, किन्तु हृदय से हम एक थे। गुरुवासी होते हुए भी हम दोनों के जीवन पर दो तरह का प्रभाव पड़ा,। श्री शास्त्री जी पर महर्षि दयानन्द के आर्य समाज का प्रभाव पड़ा, किन्तु हमारे ऊपर मार्क्स एवं लेनीन के जीवनदर्शन का प्रभाव पड़ा। सन्ध्या- हवन से हम दूर होते गये। हम दोनों विभिन्न मार्ग के राही बने। गुरुकुलीय जीवन में वे समझौता-वादी प्रवृत्ति के थे तथा अन्याय को सहते रहे, किन्तु मुझमें अन्याय को सहने की शक्ति नहीं थी। गुरुकुल अधिकारियों से संघर्ष करना पड़ा तथा गुरुकुलीय जीवन से हटना पड़ा। विचार विभिन्न रहने पर भी हम दोनों मित्र हमेशा एक रहे। आपत् काल में हम दोनों एक दूसरे की हमेशा सहायता करते रहे। शास्त्री जी का सहयोग हमारी उच्च शिक्षा प्राप्त करने में रहा है, जिसे मैं कभी भूला नहीं सकता। एक वार शास्त्री जी ने गुरुकुलीय जीवन में वादविवाद के समय कहा था-तुम बड़ा तार्किक हो, तुम्हें वकालत पढ़नी चाहिए। उन्हीं की भविष्यवाणी तथा आशीर्वाद है कि आज मैं एक वकील के रूप में विद्यमान हूं। श्री शास्त्री जी को मित्र ही नहीं, अपने बड़े भाई के रूप में मानता आया हूं। उन्होंने मुझे छोटा भाई का प्यार दिया है। बड़े भाई का सम्मान देखकर मैं आह्लादित हूं।

इस अभिनन्दन की वेला में, बड़े भाई को यशस्वी एवं दीर्घायु होने की कामना करता हूं!

श्री रामधनी सिंह, एम. ए. अधिवक्ता
मो. पो. हजौली, जि बलिया (यू.पी.)

श्री बी० के० शास्त्री के कुछ भूतपूर्व स्नेही एवं आत्मीय छात्र, जो आज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में गतिशील हैं।

श्री मदन मोहन गुप्त
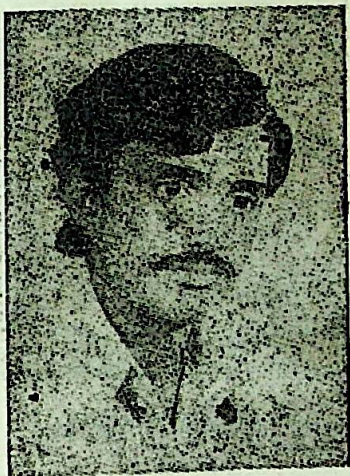
श्री आर्यानन्द प्रसाद

श्री वीरेन्द्र कुमार सर्राफ
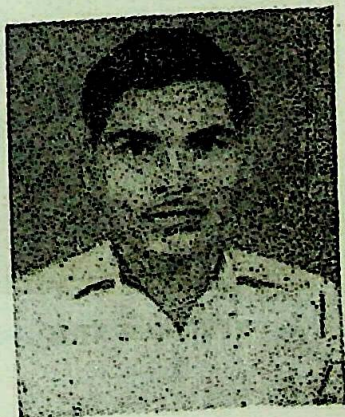
श्री अमरनाथ प्रसाद
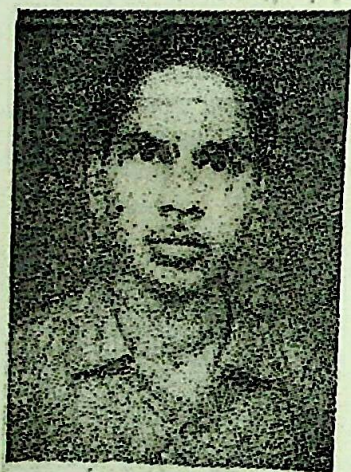
श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद

श्री नत्थू प्रसाद
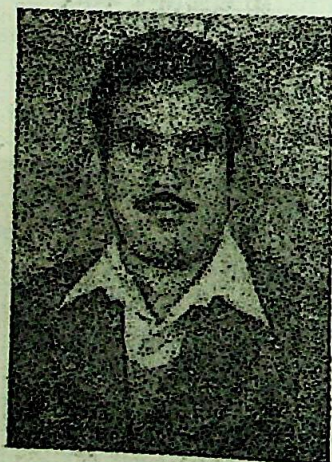
श्री बाल्मीकि प्रसाद

श्री सत्यप्रकाश
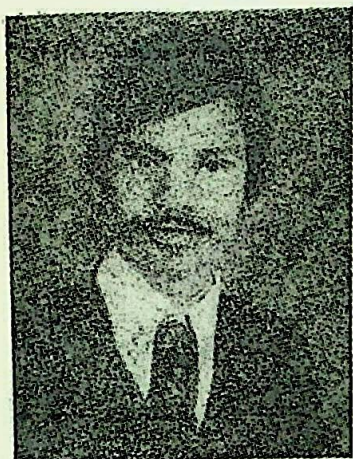
श्री विजय कुमार जायसवाल
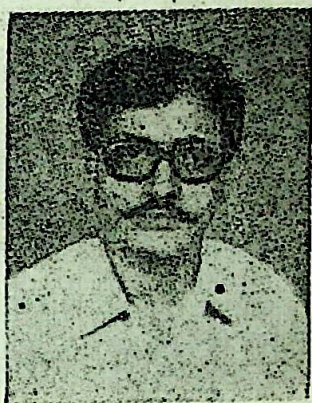
श्री अवध बिहारी सर्राफ
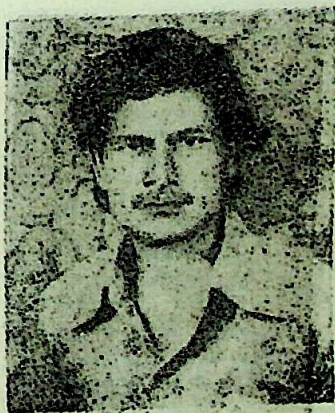
श्री रमेश चन्द्र प्रसाद

श्री मोहन लाल

श्री सुरेन्द्र प्रसाद

श्री चन्द्र प्रकाश
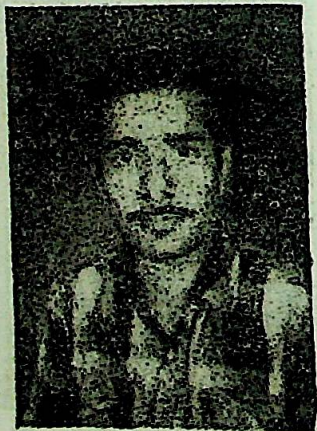
श्री राजेश्वर प्रसाद
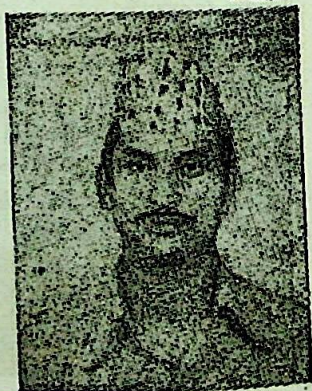
श्री रामलोचन प्र० सर्राफ

श्री लाल बाबू प्रसाद

श्री सुदर्शन प्रसाद

श्री रामपुकार सिंह

सी राजदेव प्रसाद
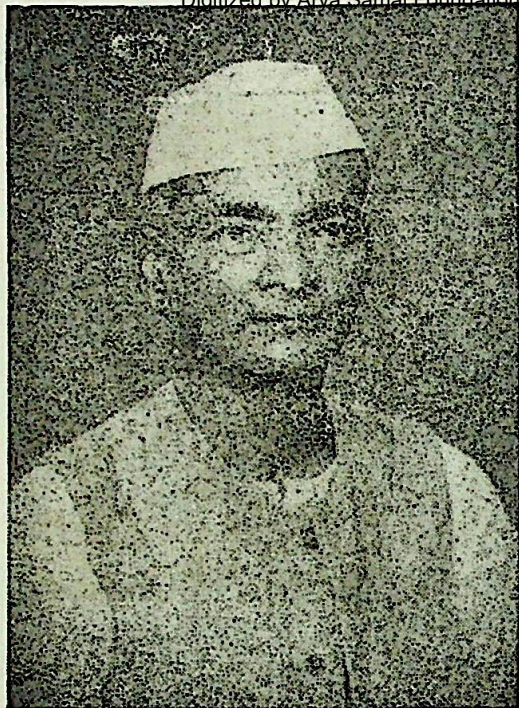
स्व० श्री प्रेमचन्द्र
जिन्होंने रक्सौल आर्य विद्यालय
के क्रियाकलापों में सक्रिय भाग लिया
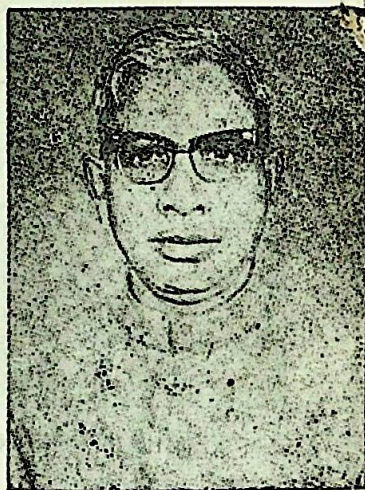
श्री वैद्यनाथ प्र० बरनवाल
आर्य समाज के
उत्थान में सहयोगी
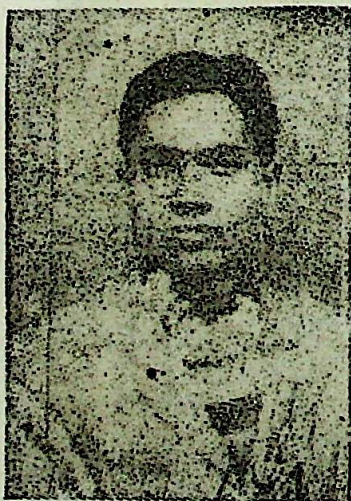
श्री श्रीनारायण प्रसाद
अध्यापक,दयानन्द विद्यालय, रक्सौल
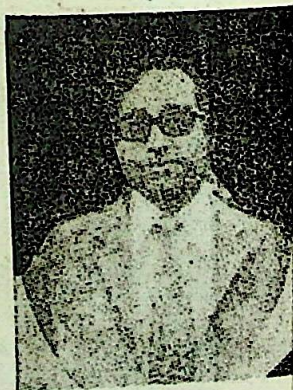
श्री विष्णु कुमार भरतिया
एम बी.बी.एस , एफ आर.
सी.एस (लंदन),शास्त्री जी
के यशस्वी छात्र

श्री बी० के० शास्त्री के दो स्नेही
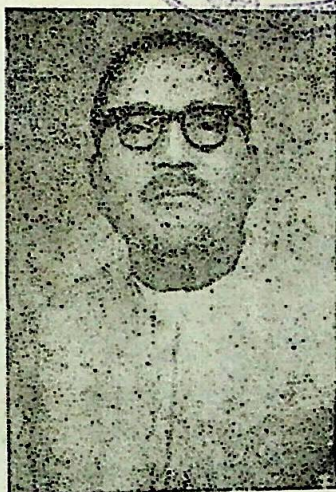
स्व० श्री राधाकृष्ण मिश्र 'विजय'

श्री जगदेव सिंह

श्री बी० के० शास्त्री अभिनन्दन पुष्पांजलि के सम्पादक द्वय

गगनदेव प्र० सिंह

कन्हैया प्रसाद

व्यापारी समुदाय के तीन कर्मठ सदस्य जिनकी शास्त्री जी के प्रति अटूट आस्था है ।

श्री भागवत प्रसाद

श्री दुखभंजन प्रसाद

श्री मोहनलाल जायसवाल
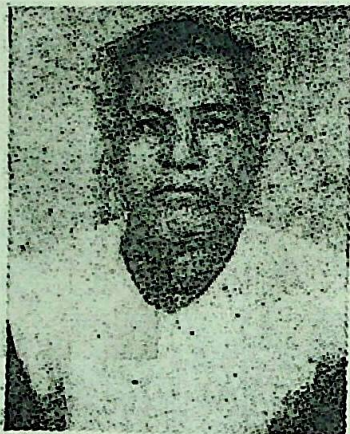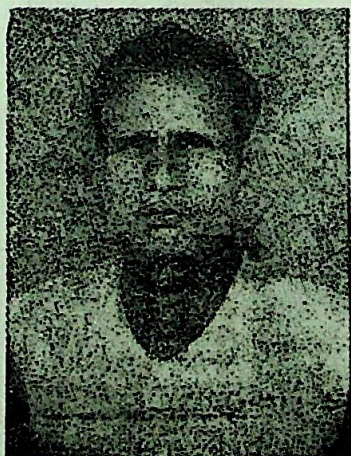
आर्य समाज, रक्सौल के प्रांगण में स्थित संस्थाओं के उन्नायक
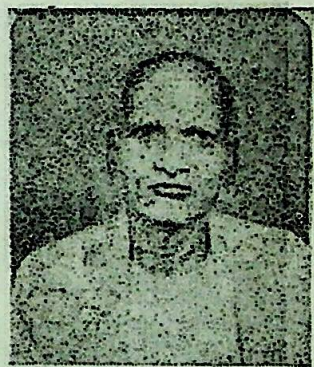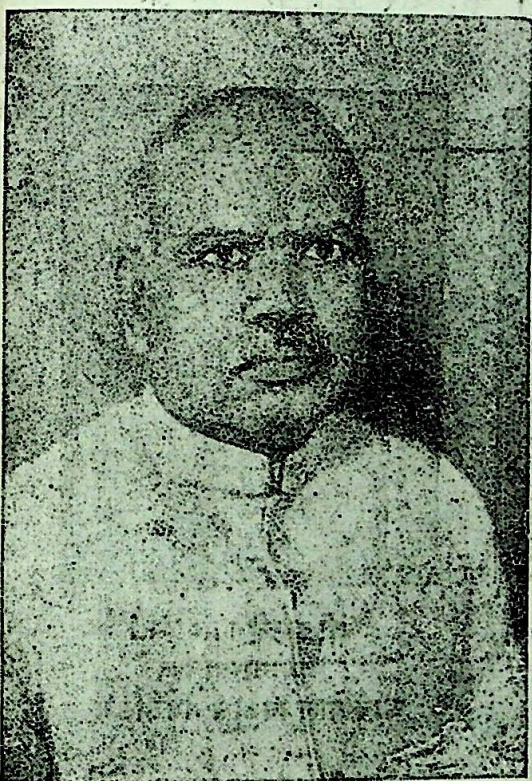
श्री रामअवतार शर्मा
कुरुकुल महाविद्यालय
बैरगनिया

स्व० श्री श्रीलाल भरतिया
रक्सौल
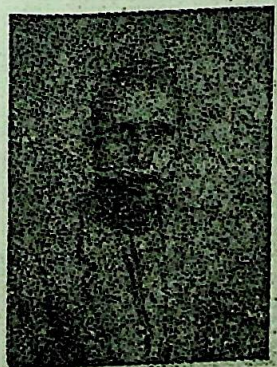
मुन्शी सत्यनारायण प्र०
वीरगंज
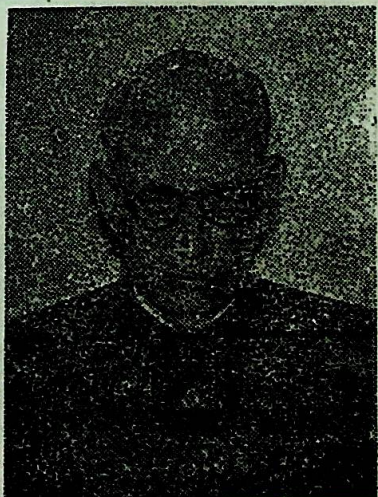
श्री रघुनाथ प्र० भरतिया, रक्सौल

शास्त्री जी के चार हितैषी
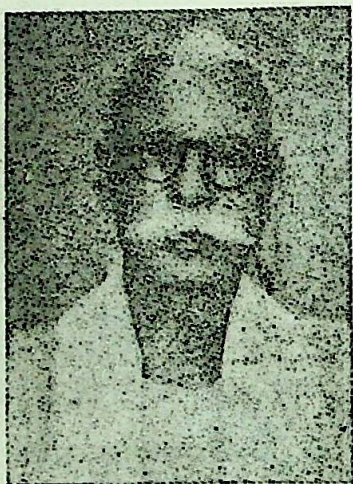
श्री जगत नारायण प्रसाद
उप-प्रधान,
जिला आर्य सभा
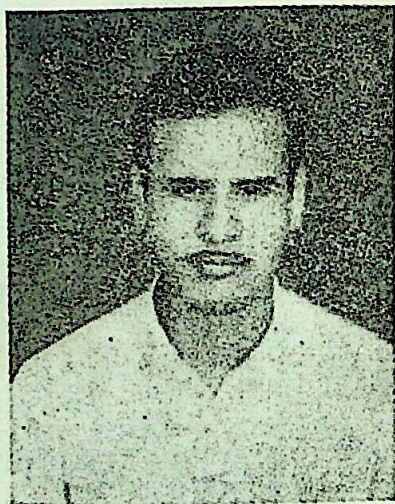
श्री इन्द्रदेव प्र० वर्मा
प्रधानाध्यापक,
आर्य बाल विकास, विद्यालय
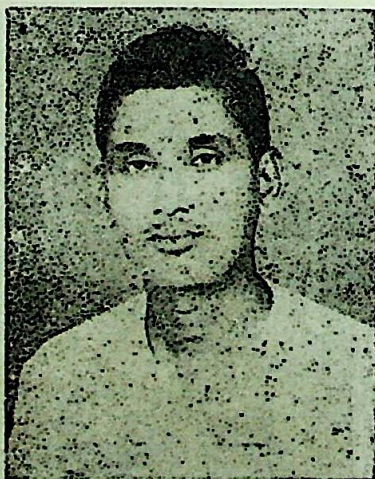
श्री देवेन्द्र सिंह, रक्सौल

श्री देवनन्द प्र०, रक्सौल

श्री शास्त्री जी—मेरी नजर में

मई १९६४ में प्रथम वार काठमाण्डु से वीरगंज आने पर आर्य समाज रक्सौल में प्रथम बार श्री शास्त्री जी से साक्षात्कार हुआ और कुछ औपचारिक बातें हुईं। २ वर्ष के बाद मेरे काठमाण्डु से बीरगंज आने पर उनसे सम्पर्क बढ़ता गया।

इधर १५ वर्ष के सम्पर्क में मैंने श्री शास्त्री जी को सदा ही मननशील मुद्रा में रहने वाले सत्यनिष्ठ एवं अपने उद्देश्यों में पूर्ण रूप से समर्पित कर्मठ एवं सच्चरित्र आर्य समाजी एवं स्वामी दयानन्द के सच्चे सिपाही के रूप में देखा हैं।

श्री शास्त्री जी की निःस्वार्थ सेवा-भावना से सभी परिचित हैं। इसी कारण रक्सौल की प्रत्येक सेवा भावी संस्था से वे किसी न किसी रूप में जुड़े रहते हैं। उनकी इस निःस्वार्थ सेवा-भावना का जीता जागता प्रतीक रक्सौल आर्य समाज और उसकी वर्त्तमान सम्पत्ति है। इसी कारण कई बार मैंने यहाँ तक कहा है कि "श्री शास्त्री जी ही रक्सौल आर्य समाज हैं।" यह अतिशयोक्ति हो सकती है, पर इससे श्री शास्त्री जी का आर्य समाज रक्सौल की उन्नति में योगदान स्पष्ट प्रकट होता है।

आज उनका अभिनन्दन करने में रक्सौल आर्य समाज और मैं अपना गौरव अनुभव करता हूँ। शान्तिमय, स्वस्थ गौरवपूर्ण शत वर्ष से अधिक दीर्घायु की कामना करता हूँ। साथ ही एक आग्रह भी कि वे अपना आगे का जीवन रक्सौल आर्य समाज और जनता की सेवा में ही समर्पित करें।

वीर प्रकाश तापड़िया
प्रधान, आर्य समाज, रक्सौल

कमनीय

कर्म से कर्मी नहीं घबराते
आयी समस्या तुरंत सुलझाते।
मन के मर्मी निश्चल रहते,
हैं ऐसे शास्त्री धर्मी बनते।
नीला गगन सा, विस्तृत हृदय;
यह होवें शतायु कहता हृदय।

राजेश आर्य
उपमंत्री, रक्सौल

शास्त्री जी--जैसा मैंने जाना

बक्सर-निवासी श्री बी० के० शास्त्री ने वाराणसी में शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की। इन्हें काशी गुरुकुल एवं श्रद्धानन्द अनाथालय में पौरोहित्य-कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। फिर श्री शास्त्री ने सेवा एवं उत्सर्ग का जीवन अपनाया, जो जीवन शालीनता के साथ आजतक जीते आ रहे हैं। बैरगनिया गुरुकुल में कुछ दिनों तक अपनी सेवा अर्पित करने के बाद सन् १९५३ में रक्सौल चले आये और फिर रक्सौल आर्य समाज के चतुर्दिक विकास में सन्नद्ध हो गए।

श्री बी० के० शास्त्री हमलोगों के कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने लगे। वर्षों से शिथिल आर्य समाज का कार्य प्रगति की ओर बढ़ने लगा। अधूरा भवन-निर्माण का संकल्प साकार होने लगा। एक-एक कोठरी का निर्माण-कार्य प्रारंभ हो गया। हमलोग सभी मिलकर श्री शास्त्री का साथ देने लगे। आर्य समाज के प्रांगण में कई संस्थाओं का निर्माण हुआ।

जिला आर्य सभा मृत प्राय: थी। श्री जगन्नाथ प्रसाद चौधरी, मोतिहारी अध्यक्ष थे। पुनर्गठन पर विचार हुआ। कई बैठकें हुईं। अन्त में १९६० में श्री बी० के० शास्त्री को मंत्री का भार दिया गया। जिला आर्य सभा की लगभग दो दशक तक सेवा के परिणामस्वरूप ज़िला सभा की ओर से पहले श्री जगन्नाथ चौधरी का अभिनन्दन हुआ। उसके बाद श्री प्रभुनारायण आर्य नरकटियागंज का अभिनन्दन हुआ। इसी प्रकार क्रमबद्ध विचार हुआ कि दो दशक तक मंत्री पद पर रहने और कार्य करने वाले कर्मठ श्री शास्त्री का अभिनन्दन समारोह हो। परिणामस्वरूप हम आज जिला के कोने-कोने से आर्य प्रतिनिधि की ओर से उनका अभिनन्दन करने को तत्पर हैं। यह कार्य उनकी कर्मठता और कार्य-कुशलता का परिचायक है। इतना ही नहीं इनके त्याग और कार्यकुशलता से ही प्रभावित होकर हमारे मित्र श्री गगनदेव प्र० सिंह, प्रधानाध्यापक फूलचन्द साह मध्य विद्यालय, रक्सौल ने श्री बी० के० शास्त्री को व्यक्ति नहीं संस्था की उपाधि दी है। यह कटु सत्य है कि श्री शास्त्री जी को इससे भी बढ़ कर कोई उपाधि हो, तो देना उचित होगा। इन्हीं शब्दों के साथ मैं श्री बी० के० शास्त्री का हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

रामाज्ञा ठाकुर
भू० पू० प्रधान, आर्य समाज, रक्सौल